उपासना का तत्त्वदर्शन और स्वरूप

— श्रीराम शर्मा आचार्य

उपासना का तत्त्वदर्शन और स्वरूप

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१०

मूल्य : १०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा समस्त सत्प्रवृत्तियों एवम् अनंत शक्तियों का केंद्र है। जीव विभु, बनना चाहता है, तो उसे अपने सामने एक आदर्श उपस्थित रखना होगा। जो परमात्मा का सच्चे मन से जितना-जितना चिंतन करता है, वह उसी अनुपात से परमात्मा के रूप में बदलता जाता है। जीवन का लक्ष्य आत्मोत्कर्ष है, उसकी पूर्ति में परमात्मा का स्मरण-चिंतन एवम् भजन-पूजन आवश्यक संबल सिद्ध होता है।

प्रार्थना के माध्यम से हम विश्वव्यापी महानता के साथ अपना घनिष्ट संपर्क स्थापित करते हैं। आदर्शों को भगवान की दिव्य अभिव्यक्ति के रूप में अनुभव करते हैं और उसके साथ जुड़ जाने की विह्वलता को सजग करते हैं।

इंजील में कहा गया है—

"जो तुम मांगते हो। सो पाते नहीं।

क्योंकि तुम गलत मांगते हो।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपासना-प्रार्थना को दैनिक जीवन में स्थान मिले

आस्तिकता की मान्यताओं को सुस्थिर रखने के लिए उपासना की अनिवार्य आवश्यकता है। स्थूल वस्तुएँ हर समय आँखों के आगे उपस्थित रहती हैं और उनका अनुभव इंद्रियों से बार-बार होता रहता है, पर जो सूक्ष्म है, अदृश्य है उसका यदि विशेष रूप से स्मरण चिंतन न किया जाए, तो उसका विस्मरण हो जाना स्वाभाविक ही है। उपयोग में आने वाली सामान्य वस्तुएँ भी यदि बहुत दिन तक व्यवहार में नहीं आतीं, तो हम उन्हें भूल जाते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही कुछ भुलक्कड़ ढंग का है, यदि ऐसा न होता, तो उसके मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियाँ इतनी अधिक भरी रहतीं कि नई बातों को सुनने समझने का स्थान ही न बचता। यह भुलक्कड़पन उन बातों पर तो बहुत अधिक प्रभाव डालता है, जो सामने नहीं है, दीखती नहीं तथा इंद्रियों द्वारा अनुभव में नहीं आतीं।

ईश्वर भी ऐसी ही एक अदृश्य सत्ता है, जो न तो इंद्रियों से अनुभव में आती हैं और न आँखों से दीखती है। ऐसी दशा में आमतौर से लोग उसे भूले रहते हैं। यों कहने को तो हम सभी ईश्वर को जानते और मानते हैं, उसके संबंध में बहुत कुछ पढ़ते-सुनते भी हैं, किंतु वह मान्यता एवम् धुँधली-सी छाया मात्र बनकर मस्तिष्क के किसी कोने में पड़ी रहती है। इतने मात्र से आस्तिकता का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। कुविचारों को रोकने और कुकर्मों पर अंकुश रखने के लिए ईश्वर की एक स्पष्ट मूर्ति हमारे हृदयपटल पर अंकित रहनी चाहिए और उनका वैसा ही स्मरण रहना चाहिए जैसा हमें अपने घर में रहने वाले निकटस्थ कुटुंबी परिजनों का रहता है। इसके बिना ईश्वर का भय एवं प्रकाश हमारे अंतःकरण में स्थिर न रह सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस्तिकता का उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है, जब ईश्वर को हम सहचर के रूप में अनुभव करें। कुविचार का अवसर आते ही, कुकर्म की इच्छा जागते ही भगवान् हमारे आगे धर्मोपदेशक के रूप में, न्यायाधीश के रूप में, पुलिस अधिकारी के रूप में उपस्थित हो सकें, तो यही संभव है कि कुमार्ग पर बढ़ते हुए हमारे कदम रुक सकें। सन्मार्ग पर चलने की जब आकांक्षा उठे और सामने प्रस्तुत कठिनाइयों के कारण मन आगे बढ़ने से हिचकिचाए तब भगवान् का स्वरूप उत्साह बढ़ाने वाले, प्रेरणा देने वाले एवं समर्थन करने वाले के रूप में सामने आना चाहिए। हिम्मत बढ़ाने वाला कोई उत्साही व्यक्ति साथ हो, तो मनुष्य बहुत कर गुजरता है। यदि सन्मार्ग के पथ पर प्रस्तुत कठिनाइयों को कुचलते हुए आगे बढ़ जाने का प्रोत्साहन भगवान की ओर से प्राप्त होवे, तो मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?

परमात्मा का मूर्तिमान रूप हमारी आँखों के आगे विचरता रहे, वह अदृश्य सत्ता सामने साकार रूप में प्रस्तुत—परिलक्षित—होवे, तभी यह संभव है कि अधर्म का परित्याग कर धर्म को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहने के लिए हमारी मनोभूमि खरी उतरे। अदृश्य परमात्मा को दृश्य रूप में साथी और सहचर के रूप में अनुभव करते रहने का महान कार्य 'उपासना' द्वारा ही पूरा हो सकता है, जप, ध्यान, पूजन, अर्चन आदि के विधान इसलिए बनाए गए है कि उस आधार पर बार-बार मनुष्य परमात्मा का मनोयोगपूर्वक स्मरण करे और उस स्मृति के आधार पर प्रभु को अपने निकटवर्ती संबंधी, कुटुंबी साथी एवम् सहचर के रूप में उपस्थित रहता हुआ सदा अनुभव करता रहे। पूजा से इसी मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है। बार-बार स्मरण करने से दो पिछड़े हुए विरहीजन अपने प्रिय को और भी अधिक निकट हृदय में बसा हुआ अनुभव कर सकते हैं, तो क्या परमात्मा को इस प्रकार स्मरण करके निकटवर्ती के रूप में अनुभव नहीं किया जा सकता ? यदि हम अपने प्रियतम को निरंतर साथ रहते अनुभव कर सकें, तो पापों से बचे रहना और पुण्य-प्रयत्नों में संलग्न रहना तो सरल ही हो जाएगा, साथ ही हम निर्भय, निश्चिंत, आशावादी और उत्साही भी रहेंगे। जिसके साथ परमात्मा जैसे शक्ति है, वह किसी से क्यों डरेगा ? चिंता, भय, शोक निराशा का उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए क्या कारण शेष रह जाएगा ? उसे अपना भविष्य उज्ज्वल और भाग्य प्रकाशपूर्ण क्यों न दिखाई देगा ? ऐसा व्यक्ति बुरी परिस्थितियों को क्षणिक एवम् अपने सुधार के लिए लगी हुई एक हलकी चपत मानकर सदा प्रफुल्लित, संतुष्ट और आनंदित रह सकता है। जब परमात्मा सत्य है, शिव है, सुंदर है, तो उसके उपासक का स्वरूप वैसा ही क्यों न होगा ?

परमात्मा समस्त सत्प्रवृत्तियों का केंद्र एवम् अनंत शक्तियों का केंद्र है। जीव-जंतु में विभु बनाना चाहता है, तो उसे अपने सामने एक आदर्श उपस्थित रखना होगा। बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने वाले इंजीनियर पहले उसका नक्शा या 'माडल' बनाते हैं और उसी के आधार पर अपना निर्माण कार्य प्रारंभ करते हैं। हम अग्रगामी होना चाहते हैं, आत्मा को परमात्मा के रूप में, मानव को महामानव, विश्व-मानव के रूप में परिणत करना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि उनके लिए कोई नक्शा या 'माडल' सामने हो। सत्-चित्-आनंद स्वरूप परमात्मा ऐसा ही आधार है, जिसको निहारते हुए अपनी प्रगति का कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं। कहते हैं कि भृङ्ग नामक मक्खी, झींगुर को पकड़कर अपने घर ले जाती है, झींगुर उसकी गुंजार सुनता और रूप देखता रहता है, फलस्वरूप धीरे-धीरे वह इस तन्मयता के आधार पर अपना झींगुर स्वरूप बदलकर भृंग के रूप में कायाकल्प कर लेता है। पुरानी पुस्तकों में 'कीट-भृंग' का यह दृष्टांत जगह-जगह मिलता है। बात कहाँ तक सच है यह खोज का विषय है, पर आत्मा के संबंध में यह सर्वथा सत्य है। वह परमात्मा का सच्चे मन से जितना-जितना चिंतन करता है, उसी अनुपात से परमात्मा के रूप में बदलता जाता है। साधारण आत्माओं से महात्मा बनते कितनों को देखा गया है। जीवन का लक्ष्य आत्मोत्कर्ष है, उसकी पूर्ति में परमात्मा का स्मरण चिंतन एवम् भजन-पूजन आवश्यक संबल सिद्ध होता है।

ईश्वर और जीव की निकटता एक-दूसरे के रूप में परिणत होना जिस मानसिक तत्त्व के आधार पर संभव हो सकता है, उसका नाम है प्रेम-भक्ति। मनुष्य, मनुष्य के हृदय में इसी गोंद के आधार पर चिपकते और घनिष्ठ होते हैं। परमात्मा और आत्मा की एकता भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी तथ्य पर निर्भर है। भौतिक पदार्थ नाशवान हैं, क्षण-क्षण में बनते-बिगड़ते रहते हैं। जीवों का भी यही हाल है, वे भी अपनी रुचि और परिस्थिति के अनुसार आँखें बदलते रहते हैं। इसीलिए उनसे सच्चा और चिर स्थाई प्रेम निभ नहीं सकता। सामने वाले की स्थिति का प्रभाव अपने ऊपर पड़ता ही है इसलिए प्रेम की साधना करने वाले को ऐसा आधार ढूँढ़ना पड़ता है, जो अपरिवर्तनशील एवं उच्च संभावनाओं से ओत-प्रोत हो। इस विश्व में परमात्मा ही एक मात्र ऐसी सत्ता है, जो मानव-जीवन की सर्वश्रेष्ठ रसानुभूति प्रेम-भावना की अधिकारी है।

उसके प्रति किया गया प्रेम ही जीवन को धन्य बनाता है। उसकी भक्ति सदैव ही प्रकाश देती है। जब चारों ओर अंधकार, अवसाद, हताशा का ही साम्राज्य दीखता है, उस समय ईश्वरीय प्रकाश ही सहसा पथ को आलोकित कर हर्ष-उल्लास का अनुपम रस-संचार कर जाता है।

आज भारत ही नहीं सारे संसार की भयावह स्थिति हो गई है। संसार एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया है, जहाँ पर किसी समय भी उसका विध्वंस हो सकता है। आज संसार को भयानक विध्वंस से बचाने के लिए वैयक्तिक तथा सामूहिक प्रार्थनाओं की परम आवश्यकता है।

द्वापर काल में महाभारत युद्ध की भयानक भूमिका देखते हुए दूरदूर्शी भगवान व्यास, राष्ट्र और विश्व की कल्याण-भावना से विकल होकर अपनी दोनों भुजाएँ उठाकर पुकार करते रहे कि "ऐ मदांध लोगो ! अर्थ और काम से धर्म श्रेष्ठ है, अर्थ को इतनी महत्ता देकर अनर्थ मत करो, परमार्थ का आश्रय लो।' किंतु अर्थ और काम के गुलाम लोगों ने उनकी पुकार न सुनी, जिसके फलस्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ।

आज संसार पुनः उसी महाभारत की स्थिति में पहुँच गया है। आज के आणविक अस्त्र उस समय के अस्त्र-शस्त्रों से अधिक भयानक और विनाशक हैं। साथ ही आज का संसार उस समय से कही अधिक लोलुप, स्वार्थी और अर्थ लिप्सु बन गया है। आज भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाने कितने मनीषी-महात्मा व्यास की भाँति विह्वलता से पुकार रहे हैं, किंतु आज का मनुष्य उसी प्रकार से फिर जैसे बहरा हो गया है। न उसे कुछ दिखाई देता है और न सुनाई।

फिर भी सदा की भाँति जहाँ एक ओर आसुरी संपद् के लोग भौतिक-साधनों द्वारा संसार के विनाश की तैयारी कर रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर संसार का कल्याण चाहने वाले दैवी संपद् के लोग आध्यात्मिक साधनों द्वारा परमात्मा से कल्याण की कामना करते हैं और देवासुर द्वंद्व में "धर्म की विजय और अधर्म का नाश" के सिद्धांत पर अंततोगत्वा धर्म की ही विजय होगी।

आज जिस प्रकार विनाशक तत्त्व संसार में व्याप्त हो गए हैं, उसी प्रकार उनका नाश करने के लिए व्यापक प्रयत्न की आवश्यकता है। धर्मप्रिय लोगों के पास ध्वंसक वृत्ति की भाँति भौतिक साधनों का भंडार तो होता नहीं और न वे इसमें विश्वास करते हैं, अपितु उनके पास जो प्रभु-स्मरण और उसकी प्रार्थना रूपी अपरमित शक्ति है, वह संसार की सारी शक्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़कर है। यदि आज संसार के सब सदाशायी व्यक्ति एक-एक अथवा एक प्रभु से प्रतिदिन प्रार्थना ही करने लगे, तो भी संसार के सारे अनिष्ट दूर हो जाएँ और उनके स्थान पर सुख और शाति का स्रोत बहने लगे।

यह निर्विवाद है कि यदि आज के धनुर्धारी, सत्ताधारी, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ आदि अपना काम करते हुए नित्य कुछ समय प्रभु की प्रार्थना का भी कार्यक्रम अपना लें, तो आज के वह सारे विनाश साधन स्वतः निर्माण साधनों में बदल जाएँ। उनके जीवन का प्रवाह अनायास ही स्वार्थ की ओर से परमार्थ की ओर वह चलेगा और तब वे स्वयं ध्वंस उपादनों से घृणा करने लगेंगे और अपनी क्षमताओं को विश्व कल्याण की दिशा में मोड़ देंगे।

किंतु उनमें यह परिवर्तन लाने के लिए अधिक से अधिक लोगों की प्रार्थनाएँ करनी चाहिए और अपनी प्रार्थनाओं में सद्बुद्धि मिलने का भी भाव रहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निरंतर देखा जाता है कि जब किसी व्यक्ति या राष्ट्र पर कोई आपत्ति आ जाती है, तो वे भी तत्परता से ईश्वर से आपत्ति दूर करने के लिए प्रार्थनाएँ करने लगते हैं। युद्ध के समय मंदिरों, मस्जिदों, गिरजों व गुरुद्वारों में सामूहिक प्रार्थनाएँ होने लगती हैं। घंटे, घड़ियाल और घंटियाँ बजने लगती हैं। अजानें, नमाजें और ग्रंथों की पाठ-ध्वनि होने लगती हैं। लोग अनुष्ठानों और प्रभुकृपा के लिए पंडितों, पुजारियों को नियुक्त करने लगते हैं। इस बात से स्पष्ट प्रकट होता है कि लोग प्रार्थनाओं के महत्त्व को समझते हैं और उनमें विश्वास करते हैं, किंतु तब पता नहीं कि नित्य प्रति प्रभु-प्रार्थना क्यों नहीं करते, जिससे संसार में आपत्तियाँ आएँ ही नहीं।

आज प्रत्येक व्यक्ति संसार के तट पर खड़ी आपत्ति को देख रहा है। फिर क्यों नहीं प्रार्थनाओं के अमोघ साधन द्वारा उनके निराकरण में लग जाता है ? क्या वह इस बात की राह देख रहा है कि विनाश का तांडव नृत्य होने लगे, तब वह प्रार्थनाओं को प्रारंभ करे। यह ठीक नहीं है। जब विनाश अपना तांडव प्रारंभ कर देगा, तब तो मनुष्य दुर्बुद्धिग्रस्त हो जाएगा। सबको अपनी-अपनी पड़ जाएगी और तब उस अशांत भाव की मनःस्थिति में प्रार्थनाओं का वह प्रभाव न होगा, जो शांत मनःस्थिति में होता है।

अतः आज से ही हम सबको वैयक्तिक और सामूहिक रूप से प्रभु प्रार्थना का कार्यक्रम, अपने और समाज के कल्याण के लिए बना लेना चाहिए।

परमात्मा की प्रार्थना एक ऐसा साधन है, जिससे कि स्थाई शांति सहज रूप से संसार में लाई जा सकती है। यदि प्रतिदिन संसार में हो रहे शांति सम्मेलनों का उद्देश्य शांति ही लाना है, तो इनके साथ थोड़ी-सी प्रार्थना भी आवश्यक है। ईश्वर की प्रार्थना करने से मनुष्य में सद्भावनाओं का विकास होता है। बिना सच्ची सद्भावनाओं के शांति स्थापना नहीं की जा सकती फिर क्यों न लाख सम्मेलन होते रहें।

मनुष्य जितना परमात्मा की ओर उन्मुख रहता है, उतनी ही उसको शांति मिलती है। संसार में शांति लाने के लिए अपने हृदय में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितनी अधिक शाँति लेकर प्रयत्न किया जावेगा, वह उतना ही अधिक सफल होगा।

केवल संसार ही नहीं छोटे-से दायरे, परिवार और यहाँ तक कि अपने व्यक्तित्व-जीवन में शांति की परम आवश्यकता है। आज संसार में सामूहिक अशांति ही नहीं वैयक्तिक अशांति भी बहुत बढ़ गई है। प्रत्येक मनुष्य अशांति से जलता हुआ दिखाई देता है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहिन, स्वामी-सेवक सब एक-दूसरे से कलह करते और अशांत होते देखे जाते हैं। क्या मनुष्य को ऐसा नारकीय जीवन बिताना शोभा देता है ? क्या यह अच्छा लगता है कि कदम-कदम पर ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट और अविश्वास का वातावरण मिलता रहे ? संसार में सुंदर स्निग्ध स्नेह की धारा बहने के बजाय आग की लपटें बढ़ती रहें ?

कौन ऐसा है जो आज इस अशांत वातावरण से त्रस्त नहीं हो गया है एक भी ऐसा व्यक्ति देखने को नहीं मिलेगा, जो इससे मुक्ति न चाहता हो। इन सारे दुःखों से छूटने का एक ही उपाय है—प्रार्थना। सच्चे अंतःकरण से मानव को दोष-दुर्गणों से रहित सत्पथगामी बनने की प्रार्थना प्रारंभ होते ही संसार के सारे दुःख, क्लेश दूर होने लगेंगे।

प्रार्थना एक विज्ञान है, जिसमें मनुष्य को बदल देने की शक्ति होती है। साधारण व्यवहार में जब विनम्रता सफलता का कारण बनती है, तो ईश्वर को लक्ष्य बनाकर, जो विनय की जावेगी, उसकी शक्ति का कितना व्यापक प्रभाव पड़ेगा, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

जब एक व्यक्ति भी प्रार्थना करेगा तो उससे वातावरण में जो प्रभाव पड़ेगा, उससे अन्य व्यक्ति प्रभावित होकर प्रार्थना करने के लिए उत्सुक हो उठेंगे और अन्यों से अन्य इस प्रकार एक दिन सारे संसार का वातावरण प्रभावित हो उठेगा। जब अनुकरण की सहज बुद्धि से मनुष्य दूसरों की बुराइयों को सीख लेता है तो क्या कारण है कि वह अच्छाइयों को ग्रहण न करेगा ? आज जब एक राष्ट्र अन्य राष्ट्र का अनुकरण कर रहा है, तो कौन कह सकता है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक देश में यदि नियमित रूप से सामूहिक प्रार्थनाओं का राष्ट्रगत कार्यक्रम अपनाया जावे, तो दूसरे राष्ट्र उसका अनुकरण नहीं करेंगे।

प्रार्थना का हमारे दैनिक जीवन में नित्य आवश्यक कार्यों की तरह स्थान रहना चाहिए। जिस प्रकार स्नान, भोजन आदि को भुलाया नहीं जाता, उसी प्रकार प्रार्थना को भी भुलाया न जाए। आत्मा को परमात्मा से मिलाने वाली इस पुण्य-प्रक्रिया को दैनिक जीवन की एक आवश्यक क्रिया मानकर, उसे नित्य-प्रति निष्ठापूर्वक करते रहा जाए।

अच्छा तो यह हो कि प्रार्थना का महत्त्व समझने और उसे दैनिक जीवन में स्थान देने के लिए जन-आंदोलन जैसी योजना बनाई जाए। इससे आस्तिक ईश्वर भक्त और प्रार्थना की शक्ति से संपन्न भारत, अपने कल्याण की ही शक्ति सामर्थ्य प्राप्त नहीं करेगा, वरन् उससे समस्त विश्व का भी कल्याण होगा।

प्रार्थना के तत्त्वदर्शन एवं स्वरूप को ठीक-ठीक समझ लेने पर ही सत्परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

❐ ❐

सच्ची उपासना का स्वरूप

उपासना में "उप" और "आसना" यह दो शब्द हैं "उप" उपसर्ग पूर्वक "आस" उपवेशने धातु से "युङ्" प्रत्यय करने पर "टापू प्रत्ययंत" "उपासना" शब्द बना। उप का अर्थ हुआ "समीप" "उपासना" का अर्थ है स्थिति। उपास्य, अराध्य की स्थिति से जितनी ही अधिक समीप अपनी स्थिति विनिर्मित कर ली जाए, जितना उसके अधिक अनुकूल-समतुल्य बना जाए, उसकी क्षमताएँ, शक्तियाँ, सामर्थ्ये उसी अनुपात में अपने अंदर आती और अपनी चेतन व भौतिक गुणों से लाभान्वित करती चली जाएँगी। भले ही वह वस्तु काल्पनिक ही क्यों न हो ? भूत का कोई अस्तित्व नहीं किंतु उसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मान्यता और विश्वास के आधार पर अंधकार में साकार भूत आ धमकता है और उस व्यक्ति को कितना भयभीत कर देता है यह हर कोई जानता है—कल्पना का यह भूत यदि किसी को विक्षिप्त, पागल और मार सकता है, तो दिव्य गुणों से, दिव्य क्षमताओं से ओत-प्रोत आराध्य हमारे जीवन को दिव्य न बनाए ऐसा कैसे हो सकता है ?

"दि ह्यूमन सेन्सेज" के रचयिता वैज्ञानिक डा० गेल्डार्ड ने अपनी पुस्तक में बताया है कि नक्षत्री गतिविधियाँ, मनुष्य की मानसिक व शारीरिक गतिविधियों को प्रभावित करती हैं। इस सिद्धांत के समर्थन में उन्होंने एक वैज्ञानिक प्रयोग का उदाहरण देकर यह समझाया है कि मनुष्य की कोशिकाओं में अनुकूल तत्त्वों को आकर्षित करने, अवशोषण कर अपने में धारण करने और इस आधार पर शरीर से टूटने वाली ऊर्जा की कमी को पूरा करने की अद्‌भुत सामर्थ्य है। इसकी जाँच तब हुई, जब शरीर के जीवित अंश को काटकर अलग रखा गया। उस स्थान पर पहले से एक विषाक्त रसायन रखा था मस्तिष्कीय प्रक्रिया से संबंध विच्छेद होने पर भी उस जीवित टुकड़े के अणु उस घातक वस्तु से दूर हटने की कोशिश करने लगे। वैज्ञानिक इस बात को देखकर आश्चर्यचकित रह गए तुरंत उन्होंने उस विषय को वहाँ से हटा दिया और अब उस स्थान पर लाभदायक औषधि रखी, तो उन कोषाणुओं का गुण पूरी तरह बदल गया; वे उस औषधि की ओर खिंचने का गुण दिखाने लगे। डा० गेल्डार्ड ने अपनी समीक्षा में बताया है कि प्रत्येक जीवाणु एक लघु उपस्टेशन है, जो मुख्य स्टेशन मस्तिष्क से जुड़ा रहता है। मस्तिष्क में जो भी भाव-तरंग उठी, उसका तत्काल स्पष्ट प्रभाव इन जीवाणुओं से झलक पड़ता है। इसी आधार पर मनुष्य आकाश की अदृश्य शक्तियों से प्रभावित होता है, मन की चुंबकीय शक्ति के द्वारा वह दूरस्थ नक्षत्र पिंडों से शक्ति-प्रवाह भी अपने अंदर आकर्षित कर धारण कर सकता और अपनी अंतरंग क्षमताओं को विकसित कर सकता है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने इन्हीं शक्ति-प्रवाहों को सूक्ष्म दैवीय शक्तियों के रूप में माना था, उनके गुणों की पृथकता के आधार पर उन्हें पृथक्-पृथक् देव शक्तियों की संज्ञा देकर उसकी उपासना की विधियाँ विकसित की थीं और उनके अभ्यास द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी क्षमताओं को विकसित कर प्रचुर भौतिक एवं अध्यात्मिक उत्कर्ष उपलब्ध किया था, आज तो उन्हें मनगढ़ंत-सा माना जाने लगा है, पर अध्ययन यह निष्कर्ष देते हैं कि वह कल्पनाएँ नहीं यथार्थ हैं आज वैज्ञानिक उनकी पुष्टि करते हैं।

क्वाण्टम थ्योरी ने परिपूरक सिद्धांत के रूप में यह स्वीकार किया कि पदार्थ अपनी ठोस अवस्था से तरल, तरल से गैस, गैस से प्लाज्मा तथा इसी तरह के और भी उन्नत किस्म के प्रकाश कणों में परिवर्तित हो जाता है, उसी तरह उच्चस्तरीय चेतन कण क्रमशः एक स्थिति में पदार्थ के रूप में भी व्यक्त हो सकते हैं। इसी तरह का प्रतिपादन वैज्ञानिक हाइजन वर्ग ने भी किया है। वे लिखते हैं कि अंतरिक्ष में एक स्थान आता है, जहाँ पदार्थ को छोड़ दिया जाए, तो वह स्वतः ऊर्जा में परिणत हो जाता है। जिस तरह पदार्थ सत्ता परिधिकाल और रूप के ढाँचे में बँधी रहती है, उसी तरह मनःसत्ता अनुभूति, स्मृति, विचार और विंब के रूप में व्यक्त होती है। इतना होने पर भी दोनों में अत्यधिक घनिष्ठता है। यह एक-दूसरे को प्रभावित ही नहीं करते, अपितु परस्पर आत्मसात भी होते रहते हैं। उपासना का कार्य इस प्रक्रिया को ही अत्यधिक प्रगाढ़ बनाकर उन शक्तियों से लाभान्वित होना है।

प्रख्यात प्राकृतिक चिकित्साविद् डॉ० हेनरी लिंडलहर ने अपनी पुस्तक "प्रैक्टिस आफ नेचुरल थेराप्युटिक्स" में मानवीय मनोभावों को सर्वव्यापी ब्रह्म सत्ता किसी देव सत्ता, अदृश्य देवदूत, सिंह पुरुष, महान् सद्गुरु यहाँ तक कि लौकिक दृष्टि से किसी प्रेमी के मनोभावों से जोड़कर उनकी विचारणाओं, अनुभूतियों को आत्मसात कर न केवल उनकी भावनाएँ समझने की बात स्वीकार की है, अपितु यह भी माना है कि इष्ट की भौतिक परमाणु या शारीरिक अनुभूतियाँ भी उस स्थिति में विलक्षण रूप में आकर्षित होती हैं। गंगा के पानी को एक नहर काटकर अन्यत्र ले जाया जाए, तो उस जल के सभी गुण वहाँ तक खिंचे चले जाएँगे, जहाँ तक नहर जाएगी। इस तरह अपने शरीर मन, भावनाओं का तेजी से विकास होता है। गुरुजनों के स्मरण, देवताओं की आराधना और इस तथ्य के समर्थन में दो घटनाएँ प्रमाण और साक्ष्य रूप में प्रस्तुत हैं। 'साइकॉलाजी ऑफ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रिलीजन' पुस्तक में लेखक श्री थूलेस ने सेंट कैथाराइन का प्रामाणिक विवरण दिया है। जब वह समय आया था, जबकि यीशुमसीह क्रास पर कील से ठोके गए थे, उस समय सेंट कैथराइन अपने शरीर के विभिन्न स्थलों में वैसी ही पीड़ा का अनुभव करती थीं, जैसी शरीर में कीलें ठोकने पर होती है। ऐसी अवस्था में एक डॉक्टर को उनकी देखभाल करनी होती थी। डॉक्टरी जाँच से पाया गया कि कैथराइन की पीड़ा अनुभूति वास्तविक थी।

यह उपास्य से उपासक के गहरे तादात्म्य का ही परिणाम है। न केवल चेतन परमाणु, अपितु जड़, पिंड और वह भी काल और ब्रह्मांड की सीमा परे तादात्म्य जोड़े जा सकते हैं और इस तरह असंभव लगने जैसी भूत और भविष्य की घटनाओं की भी जानकारी ली जा सकती है।

वैज्ञानिकों ने भी मन की शक्ति को नाप-तौल करने का प्रयत्न किया है। उनके मतानुसार मन भौतिक शरीर की चेतन शक्ति है—आइन्स्टीन के शक्ति सिद्धांत के अनुसार न कुछ भार वाले एक परमाणु में ही प्रकाश की गति × प्रकाश की गति अर्थात् १८६००० × १८६००० कैलोरी शक्ति उत्पन्न होती है। ५४ लाख टन कोयला जलाने से जितनी शक्ति मिलती है, उतनी ही शक्ति की मात्रा १ पौंड पदार्थ की शक्ति की होती है। यदि इस शक्ति को पूरी तरह शक्ति में बदलना संभव होता, तो एक पौंड कोयले में जितना द्रव्य होता है यदि उसे शक्ति में परिवर्तित कर दिया, तो संपूर्ण अमेरिका के लिए १ माह तक के लिए बिजली तैयार हो जाएगी।'

डॉ० बैनेटर्न मन को एक महान् विद्युत शक्ति कहते हैं। (ए ग्रेट इलैक्ट्रिकल फोर्स) वेदों में मन को ही 'ज्योतिषां ज्योतिः' कहा गया है। मन शरीर के द्रव्य की विद्युत् शक्ति है। मन की एकाग्रता जितनी बढ़ेगी, शक्ति उतनी ही तीव्र होगी। यदि संपूर्ण शरीर को इस शक्ति में बदलना संभव हो सके, तो १०० पौंड भार वाले शरीर की विद्युत् शक्ति अर्थात् मन की सामर्थ्य इतनी अधिक होगी कि वह पूरे अमेरिका को लगातार दस वर्ष तक विद्युत् देता रह सके। इस प्रचंड क्षमता से ही भारतीय योगी, ऋषि-महर्षि शून्य आकाश में विस्फोट किया करते थे और वे किसी को कुछ उपदेश दिए बिना मात्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकल्प बल से विश्व की मानवीय समस्याओं का समाधान निर्देशन करते थे। प्रो० ऐलीशाग्रे ने अपनी पुस्तक "मिरैक्ल्स ऑफ नेचर" में मन की उक्त प्रचंड सामर्थ्य का समर्थन किया हैं और उसे ज्ञात शक्तियों में सबसे अधिक प्रचंड बताया है। डॉ० लुएस क्राउन के अनुसार ताप विद्युत् आधिभौतिक पदार्थों को एक सीमा में ही प्रवाहित करती हैं, किंतु विचार विद्युत् व्यापक रूप से सारे वातावरण को प्रभावित कर सकती हैं आप्टन सिन्क्लेयर नामक लेखक ने अपनी पुस्तक 'मेंटल रेडियो' में लिखा है कि प्रत्येक मनुष्य का मस्तिष्क एक सशक्त वायरलैस सेट है। मनुष्य बिना किसी भौतिक माध्यम के दूसरों तक अपने विचार आसानी से पहुँचा सकता है। साथ ही स्वयं का मन, मस्तिष्क उत्कृष्ट विचार-प्रवाहों तथा दिव्य संदेशों के लिए खुला रखकर अपना आत्म-विकास कर सकता है। आनंद और उल्लास के अनंत अजस्र स्रोत से स्वयं को जोड़ सकता है।

उपासना में आनंद कब नहीं आता ? जब कोई मनुष्य उसे सामान्य जीवन क्रम से भिन्न एक विशेष कर्तव्य समझकर करता है ऐसा भाव रहने से कुछ समय बाद उपासना उसे एक अनावश्यक बेकार-सा अनुभव होने लगती है, जिससे वह आनंद अनुभव करने के स्थान पर थकान अनुभव करने लगता है और कुछ ही समय में उसे छोड़छाड़ कर बैठे रहता है।

मनुष्य का सहज स्वभाव है कि जो कार्य उसके जीवन-क्रम में रमे नहीं होते अथवा जिनका वह अभ्यस्त नहीं होता उनके करने में वह खिन्नता ही अनुभव करता है, यहाँ तक कि रोजमर्रा के बँधे टके कामों में भी यदि कोई काम आकस्मिक आवश्यकतावश बढ़ जाता है, तो वह उसे करता भले ही है, किंतु एक बेकार, एक बोझ की तरह है।

यही नियम उपासना के विषय में भी लागू होता है। अतएव उपासना जीवन-क्रम से भिन्न किसी विशेष कर्तव्य की भाँति नहीं, जीवन-क्रम के एक अभिन्न अंग की भाँति करनी चाहिए। उपासना जब जीवन का एक आवश्यक अंग बन जाती है, तो उसकी पूर्ति करने में वैसी ही तृप्ति होती है। जैसी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में। जीवन का अंग बनी उपासना को जब तक पूरा नहीं कर लिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता, तब तक हृदय में उसी प्रकार की छटपटाहट रहती है जैसी किसी प्रियतम से मिलने की इच्छा में। उपासना मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग है। उसे इसी रूप में ग्रहण करनी चाहिए। उपासना को किसी विशेष कर्तव्य के रूप में ग्रहण करने से भिन्नता का भाव रहता है। पूरे समय यह विचार घेरे रहता है कि मैं कोई विशेष काम अंजाम दे रहा है, जिसके कारण उसमें एकाग्रता प्राप्त नहीं हो पाती, जिसके अभाव में उसमें अपेक्षित आनंद की उपलब्धि नहीं होती। स्वाभाविक है कि जिस कार्य में अरुचिपूर्ण निरानंदता रहती है, वह देर तक नहीं चल पाता और यदि खींच-तान कर चलाया भी गया तो उसमें किसी बड़े फल की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

उपासना में तब भी कोई आनंद नहीं आता, जब वह किसी लाभ अथवा लोभ के लिए की जाती है। किसी स्वार्थ के वशीभूत होकर जब उपासना की जाती है, तब उपासक का ध्यान इष्ट के प्रति लगा रहने के स्थान पर अभीष्ट के प्रति लगा रहता है। जिनकी भावनाओं का वेग इष्ट की ओर उन्मुख रहने के बजाय लोभ की ओर गतिमान रहता है, इससे इष्ट की प्राप्ति के बजाय लोभ को बल मिलता है, जिसमें वह उत्तरोत्तर दूर्निवार होता जाता है और कल्याणकारी उपासना प्रतिकूल दिशा में फलीभूत होने लगती है। मनुष्य लोभ, लाभ, स्वार्थ एवं कामनाओं का भंडार बनकर स्वयं अपने लिए भयंकर बन जाता है।

इस प्रकार से संभ्रमित उपासक अपनी समीपता के कारण जब दुःख-दुरितों के शिकार बन जाते हैं, तब उपासना अथवा इष्ट को दोष देकर यह धारणा बना लेते हैं कि अधिक पूजा पाठ करने वाला दुःख दरिद्रता और दीनता का भागी बन जाता है। इस प्रकार की धारणा भयंकर भूल एवं प्रवंचना है।

जो उपासक दीन-दरिद्र अथवा हीन दिखाई दे, उसके विषय में निःसंकोच समझ लेना चाहिए कि इसकी उपासना में लोभ क्रियाशील है। इसको वंचक उपासना ने ही दिशा में भेजा है। अन्यथा उपासना का फल है—तेजस्विता, सबलता, संयमता आदि का दिव्य गुण।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके अतिरिक्त सकाम उपासना भी निश्चित होकर बहुत समय तक नहीं चल पाती। वह दिन-प्रतिदिन साधना को कामनाओं की कसौटी पर कसता रहता है और जब उसकी कामनाएँ फलीभूत होती नहीं दीखतीं, तो वह धीरे-धीरे उपासना से ऊबने लगता है और शीघ्र ही निरर्थक कार्य समझकर उससे विरत हो जाता है। कामनाओं की उपासना से विरत हुआ उपासक मृत्यु से भयभीत और जीवन से निराश कायर की तरह त्रासपूर्ण जिंदगी बिताता है।

उस उपासक की निरंतरता निरापद नहीं है, जो एक विस्तृत कर्मकांड और आडंबर पर आधारित होती है। एक तो इस प्रकार की उपासना के लिए एक लंबे समय की आवश्यकता है, जिसका मनुष्य के व्यस्त जीवन में प्रायः अभाव ही रहता है। दूसरे बहुत प्रकार के उपकरण एवं उपादान एकत्र करने में काफी धन की आवश्यकता है। आज के महँगे जीवन में जीवन की सीमांत आवश्यकताएँ जुटाना कठिन हो रहा है, तब महँगी उपासना को मनुष्य को कब तक चला सकता है ? ऐसी उपासना संपन्न करने के लिए एक सामान्य स्थिति के व्यक्ति को अपने पारिवारिक व्यय में कुछ कोताही करनी पड़ेगी, जिससे उसको तथा उसके परिवार को प्रत्यक्ष में न सही, परोक्ष में तो कुछ न कुछ तकलीफ होगी ही। उपासना के लिए खर्च जुटाने में उसे अपना ध्यान घर के बजट में कतरव्योंत करने में लगाना पड़ेगा। इस प्रकार उक्त महँगी उपासना एक आर्थिक योजना बनकर रह जाएगी, जिससे आत्मिक शांति के स्थान पर मानसिक उद्विग्नता बढ़ सकती है और ऐसी स्थिति में उपासना का दीर्घकाल तक चल सकना संदिग्ध ही होगा।

उपासना के लिए अधिक आडंबर भी ठीक नहीं है। असामान्य रूप में रहने वाला उपासक समाज में अन्यथा दृष्टिकोण से देखा जाता है। कोई उसे कौतूहल की दृष्टि से, कोई आदर की दृष्टि से तो कोई उपासक की दृष्टि से देखता है, इससे उपासक की मानसिक स्थिति जब तक अपेक्षित कोटि में न पहुँच जाए, तब तक उसके मानसिक भावों का वांछित प्रभाव नहीं पड़ता। समाज में सांकेतिक स्थल बनकर कभी वह हर्ष और कभी अमर्ष के वशीभूत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होकर आंदोलित होता रहता है, जो कि उसकी साधना के लिए हितकर नहीं होता।

इसके अतिरिक्त आडंबरित साधक स्वयं भी समाज में अपने को एक विशिष्ट व्यक्ति अनुभव करता है। अपने को जन साधारण से कुछ अधिक पवित्र समझता है। कभी-कभी आडंबर की अपेक्षा से उसे अपने इस भाव की अभिव्यक्ति भी करनी होती है। अपने को विशिष्ट अथवा कुछ ऊँचा अनुभव करने के कारण उसमें अहंकार की वृद्धि हो जाती है, जो उपासना के अमृत में विष का काम करता है।

अंदर से सामान्य होने पर भी बाहर से सहज सामान्य रहना ही उपासक के लिए अधिक हितकर है। अपने स्वभाव एवं संस्कारों के कारण जन-साधारण आडंबर के प्रति अधिक आकर्षित होता है, जिससे उपासक भावनाओं की अपेक्षा लोकप्रियता के लोभ में फँसकर आडंबर की ओर अधिक ध्यान देने लगता है।

समय एवं साधना का असंयम भी ऐसा कारण है, जो उपासक में वांछित गंभीरता नहीं आने देता। मन और मस्तिष्क पर वे अपेक्षित संस्कार नहीं पड़ने पाते, जिसके बल पर उपासना में निरंतरता आती है और उपासक अध्यात्म लाभ की ओर अग्रसर होता है। कभी किसी समय उपासना करना, उसी प्रकार की धार्मिक अथवा आध्यात्मिक अनियमितता है, जिस प्रकार आहार-बिहार की। इस प्रकार की अनियमित उपासना शक्ति को विशुद्ध आध्यात्मिक न बनाकर आध्यात्मिक रोगी बना देती है, जिससे किसी सुख-शांति की आशा करना असमान्य कल्पना मात्र ही होगी।

उपासना में इष्ट की अदला-बदली का अर्थ है कि आप उसकी गरिमा को कोई महत्व न देते हुए दैवी शक्तियों के साथ खिलौनों की तरह खेलते हैं। उनका महत्व आपकी रुचि पर निर्भर है। साथ ही इष्ट की अदला-बदली से यह भाव भी प्रकट होता है कि आप किसी एक दैवी विभूति को किसी दूसरी से कम या ज्यादा समझते हैं उपासना के क्षेत्र में विषमता का यह भाव सबसे अधिक घातक है। इस प्रकार की चेष्टा से मानसिक चांचल्य की वृद्धि होती है, जिसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण न उपासना में मन स्थिर हो पाता है और न उसका कोई फल होता है।

निष्काम भाव से किसी भी एक इष्ट में सर्वेश्वर की सत्ता का विश्वास रखकर एक विधि एक मन से जीवन का अभिन्न अंग समझकर संयम एवं सामान्यतयापूर्वक नियमित उपासना करना ही वास्तव में उपासना है, जो जीवन भर चलती भी है और फलवती भी होती है।

संसार के सारे पदार्थ और सारी क्रियाएँ साधन हैं। साध्य केवल है आत्म-शांति। यदि आत्मा में शांति का अभाव है, तो किसी के पास कितना ही वैभव, कितनी ही विभूति और कितनी ही शक्ति क्यों न हो, समाज में कितना ही आदर-सम्मान क्यों न हो, उसे कोई भी ऐसी अनुभूति नहीं हो सकती, जिसे सुख की संज्ञा दी जा सके।

इस आत्म-शांति के अभाव में अपनी समझ से संसार का सारा सुख भोग लेने पर बड़े-बड़े सम्राटों और श्रीमंतों को असंतोष से भरी भयानक मृत्यु मरना पड़ता है। तड़प-तड़प कर उनके प्राण निकलते हैं और कलप-कलपकर वे संसार छोड़ते हैं। जब संसार का सुख भोग लिया—पदार्थों का आनंद ले लिया, तब अंत समय में कलपना किसलिए ?

स्पष्ट है कि ऐसे व्यक्ति की आत्मा में असंतोष होता है, जो जीवात्मा को रह-रहकर संसार की ओर ढकेलता है। असंतोष का निवास वहीं रहता है, जहाँ शांति की शीतलता नहीं होती, आत्मा में जब असंतोष का ज्वर है, तो वहाँ पर शांति की शीतलता नहीं ही होनी चाहिए।

आत्म-शांति की उपलब्धि संसार के सुखों और पदार्थों के भोग से संभव नहीं। उसकी प्राप्ति तो तब होती है, जब मनुष्य के जीवन आचरण में श्रेष्ठता का समावेश होता है। श्रेष्ठता ही आत्म-शांति का एक मात्र आधार है। श्रेष्ठ आत्मा वाले व्यक्ति कितने ही गरीब और एकाकी क्यों न हों उन्हें असंतोष की यातना सहन नहीं करनी पड़ती। विद्वान, परमार्थी, भक्त तथा परोपकारी व्यक्ति श्रेष्ठ आत्मा वाले ही होते हैं। इसी संबल के आधार पर ही तो वे अभावों से भरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना जीवन शांति के साथ जीते हैं और संतोष के साथ शरीर छोड़ते हैं। उन्हें किसी तरह का मनस्ताप नहीं सताता। ऋषि, मुनि, महात्मा, मनीषी, चिंतक तथा दार्शनिक व्यक्तित्व न कभी धनी वैभववान रहे हैं और न उन्होंने सांसारिक पदार्थ के भोगों में अपना जीवन निमग्न किया। उनका जीवन सदा ही सरलतम तथा सादा रहा है। भोजन, वस्त्र और निवास जितना साधारण कोटि का हो सकता है उनका रहा। दिनचर्या और परिश्रम उनका इतना कठिन और कठोर रहा है, जो किसी के लिए कष्ट के समान ही हो सकता है। आगे भी इसी कोटि के व्यक्ति इसी प्रकार अभाव भरा जीवन ग्रहण करेंगे और आज भी जो जहाँ है, जाकर देखा जा सकता है, ऐसा ही जीवन-यापन करते दिखाई देंगे। तब भी उनके समान सुखी तथा संतुष्ट कोई दूसरे कदाचित ही रह पाते हैं। इसका केवल एक ही कारण है, और वह है उनकी आत्म-श्रेष्ठता। जिसने अपनी आत्मा में श्रेष्ठता का विकास कर लिया आत्म-शांति उसकी अपनी वस्तु हो ही जाती है। साध्य पर अधिकार हो जाने पर साधनों से चिपटे रहना किसको श्रेयष्कर हो सकता है ? सूर्य का प्रकाश उपलब्ध होने पर दीपक जलाने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

जिनका विकल्प आत्म-शांति है, उस श्रेष्ठता का लक्षण है शुभ दर्शन। श्रेष्ठ व्यक्ति को सारे संसार में, सारी दिशाओं में, सारी घटनाओं में तथा सारे संयोगों में केवल कल्याण के दर्शन ही होते हैं। वह शुभ के लिए ही शुभ-कर्म करता है और उसके परिणाम को किसी भी रूप में शुभ ही देखता और कल्पना करता है। निराशा, निरुत्साह, खेद, दुःख, पश्चात्ताप, अमंगल अथवा असंभाव्य की आकांक्षा उसे विचलित नहीं कर पाती। जो स्थिति उसकी असफलता तथा संपन्नता में रहती है, वही सफलता एवं विपन्नता में रहती है उसका हर्ष, उसका सुख और उसका संतोष भंग नहीं होता।

दुनियाँ पर यदि दृष्टिपात किया जाए, तो एक-दो नहीं सैकड़ों व्यक्ति हँसते-खेलते, बोलते, मुद्रित तथा प्रसन्न होते दिखलाई देंगे। उनको देखकर यह कहना कठिन हो जाएगा कि इनके जीवन में कोई दुःख, ताप, अशांति या असंतोष भी हो सकता है। कहने के लिए यह भी कहा जा सकता है कि ये सब श्रेष्ठ-आत्मा व्यक्ति होंगे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन्हें आत्मशांति मिल चुकी होगी, तभी तो यह प्रसन्नता इनके मुख-मंडलों पर विराजमान दिखलाई दे रही है।

पर बात वास्तव में वैसी नहीं होती। उनकी प्रसन्नता का रूप वही होता है जैसे कोई स्वप्न अथवा सन्निपात में हँसता या प्रसन्न होता है। उनकी यह प्रसन्नता मौलिक नहीं होती और न स्थाई ही। या तो वे उस समय किसी पदार्थ भोग से छके होते हैं अथवा लाभ प्राप्ति से विमोहित। उनके हर्ष का हेतु खोजकर हटा दिया जाए, तो उनका उल्लास भी नष्ट हो जाएगा।

वास्तविक अथवा आध्यात्मिक हर्ष तो यह माना जाएगा, जो अहेतुक हो, जिसका आधार आत्मा के अतिरिक्त और कुछ न हो। संसार के नश्वर और क्षणिक भोग सुख से अनुभव होने वाला हर्ष एक छलना है, सो भी नश्वर छलना के समान ही होता है, जिसका प्रवंचन भी अधिक देर तक नहीं ठहरता। यथार्थ तथा स्थाई प्रसन्नता उसी को कहा जा सकता है, जिसका विकल्प दुःख कदापि न हो। आज किसी को व्यापार में लाभ हुआ है, किसी का विवाह हुआ है अथवा किसी को पुत्र की प्राप्ति हुई है। वह प्रसन्न तथा हर्षित दिखाई देता है। इसका अर्थ यह नहीं कि उस उल्लास के माध्यम से उसकी आत्म-श्रेष्ठता व्यक्त हुई है। वह हर्ष, वह उल्लास वह प्रसन्नता उक्त लाभ अथवा उत्सव की प्रतिक्रिया मात्र होती हैं, जो पुनः आवेग समाप्त हो जाने पर शमन हो जाती है और मनुष्य अपनी उदासीन स्थिति में वापिस चला जाता है और पुनः खेद दुःख अनुभव करने लगता है।

जो प्रसन्नता लाभ में बनी रहे, वह हानि में भी स्थिर बनी रहे, जो संपत्ति के समय अनुभव हो वही विपत्ति के समय, जो अनुकूलताओं में जाग्रत् रहे और प्रतिकूलताओं में भी नष्ट न हो वही सच्ची तथा श्रेष्ठताजन्य मानी जाएगी।

आत्मा की श्रेष्ठता परमात्मा की उपासना से प्राप्ति होती है। नास्तिक अथवा आध्यात्मिक व्यक्ति संसार का कोई भी वैभव, कोई भी पदार्थ और कोई भी भोग क्यों न प्राप्त कर ले, पर उसे सच्ची आत्मोत्कृष्टि नहीं मिल सकती है। इस संसार में जो कुछ शुभ है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रेष्ठ है, उत्कृष्ट है और मंगलमय है वह सब उस परमपिता की विभूति है। उसी से संपन्न होती है और उसी में आश्रित है। सृष्टि का सौंदर्य, पृथ्वी की संपन्नता, सार का भंडार, वनस्पतियों का स्वाद औषधियों की शक्ति, ग्रह नक्षत्रों का प्रकाश, ऋतुओं का आनंद और मनुष्य की अनुभूति शक्ति—सबके पीछे उस परमात्मा की ही विभूति विराजमान है। संसार की सारी श्रेष्ठताओं को परमात्मा का अभास ही माना गया है। परमात्मा से ही सब कुछ सुंदर है, उसी से सब कुछ मंगलमय है अस्तु आत्मा की श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए संसार के साधनों की ओर न जाकर परमात्मा की ही उपासना करनी चाहिए।

उपासना का अर्थ है—समीप बैठना। सामीप्य अथवा उपसंग। जिसके समीप उपस्थित रहा जाएगा, उसकी विशेषता अपने में आ जाना स्वाभाविक ही होता है। गर्म लोहे के पास स्थित ठंडा लोहा उसकी गर्मी ग्रहण करता हुआ स्वयं भी गर्म हो जाता है। हिम के संपर्क में आ जाने वाली वस्तु ठंडी हो जाती है। जंगल में चंदन के वृक्ष के समीप उगा वृक्ष भी उसके संपर्क से चंदन जैसा ही गंध वाला हो जाता है और प्रकाश के संग में आने वाली वस्तु भी प्रकाशित हो उठती है। संपर्क संसर्ग अथवा उपस्थिति को गुण-दोषों की ग्राह्यता का बहुत बड़ा कारण माना गया है।

उपासना में रहने वाला व्यक्ति परमात्मा के समीप ही रहता है और उसके परिणामस्वरूप उसकी विशेषताएँ ग्रहण करता रहता है। परमात्मा सारी श्रेष्ठताओं तथा उत्कृष्टताओं का विधान है। इसलिए वे गुण उस उपासक में भी आने और बसने लगते हैं। कोई कारण नहीं कि मनुष्य हिमाच्छादित पर्वतों के समीप रहे और शीतलता अनुभव न करे। फूलों से भरी वाटिका में रहने पर तन मन सुगंधित न हो उठे, ऐसा होना संभव नहीं। जो भी उपासना द्वारा परमात्मा का सामीप्य प्राप्त करेगा, उसके समीप बना रहेगा, उसमें परमात्मा का गुण, श्रेष्ठता का स्थानांतरण होना चिर स्वाभाविक और निश्चित ही है।

हजारों लाखों व्यक्ति नित्य ही पूजा-पाठ करते दिखलाई देते हैं। वे ऐसा भी समझते हैं कि उपासना कर रहे हैं। बहुत-से दूसरे लोग भी उन्हें उपासक मान बैठते हैं, पर उनकी यह उपासना वांछित फल के साथ सफल नहीं होती। न तो उन्हें श्रेष्ठता मिलती है और न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-शांति। वे पूजा-पाठ करने के बाद भी झूँठ बोलते हैं, मक्कारी करते हैं, क्रोध लोभ और मोह के वशीभूत रहते हैं, जिसके फलस्वरूप मन में न तो शीतलता और आत्मा में संतोष की अनुभूति होती है। ज्यों के त्यों, शोक-संतापों, यातनाओं, त्रासों, शकांओं, अभावों तथा असंतोष से पीड़ित रहा करते हैं। पूरी तरह से यथावत् भव रोगी बने रहते हैं। परमात्मा के वे श्रेष्ठ गुण, जिन्हें प्रेम, सौहार्द्रय करुणा दया, आत्मीयता, आनंद, शाति आदि के नामों से पुकारा जाता है, प्राप्त नहीं होते। शतशः चितंन के बाद भी स्थाणु के स्थाणु बने रहते हैं उनके कोई पल्लव प्रस्फुटित होते हैं और न खिलते हैं।

परमात्मा की उपासना करने से उसकी श्रेष्ठताओं का आत्मांतरित होना एक अटल सत्य है इसमें अपवाद हो ही नहीं सकता। जब उपासना करता दिखलाई देने पर भी किसी व्यक्ति में श्रेष्ठ परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर न हों, तो कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति असंदिग्ध घोषणा कर सकता है कि वह उपासना, उपासना नहीं, बल्कि आडंबर मात्र है, दिखावा है प्रदर्शन है।

सच्ची उपासना का अर्थ है आत्मा को परमात्मा से जोड़ देना। ऐसा करने पर, जिस प्रकार किसी प्रणाली द्वारा खाली जलाशय को भरे, जलाशय से संबंधित कर देने से उसकी जलराशि उसमें भी आने लगती है और रिक्त जलाशय भी उसकी तरह ही पूर्ण हो जाता है, उसी प्रकार आत्मा द्वारा परमात्मा से संबंध बना लेने से परमात्मा की श्रेष्ठताएँ मनुष्य में भी प्रवाहित हो जाती हैं, किंतु इस माध्यम के बीच कोई व्यवधान रख दिया जाए तो प्रवाह रुक जाएगा। जलाशय को जल और मनुष्य को श्रेष्ठता प्राप्त नहीं होगी।

आग के पास आने पर ठंडा लोहा ऊष्मा प्राप्त करता है, पर यदि आग और उसके बीच लकड़ी का एक पटा रख दिया जाए, तो लोहा आग की गरमी से वंचित रह जाएगा। इसी प्रकार जब उपासना की विधि में आत्मा और परमात्मा के बीच कामनाओं का व्यवधान डाल दिया जाता है, तो मनुष्य परमात्मा को ग्रहण करने से वंचित रह जाता है। जिन उपासकों में परमात्मा के लक्षण संकलित होते दिखलाई न दें समझ लेना चाहिए कि उसकी आत्मा और परमात्मा के बीच कामनाओं, वांछनाओं तथा वासनाओं का व्यवधान पड़ा हुआ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है और जब तक व्यवधान हटाया नहीं जाएगा, उपासना का वास्तविक फल प्राप्त होना संभव नहीं। अधिकांश पूजा-पाठ तथा चंदन-वंदन करने वाले उपासना नहीं उपासना का आडंबर ही किया करते हैं या उसके आधार पर उन्हें अपना महत्त्व प्रदर्शन करने का भाव घेरे रहता है अथवा उसकी उपासना का लक्ष्य किसी कामना की पूर्ति रहता है परमात्मतत्त्व की प्राप्ति नहीं।

मनुष्य जीवन का चिर साध्य है आत्म-शांति, जिसका आधार है। वे श्रेष्ठताएँ जो परमात्मा के स्वाभाविक गुण हैं और उन्हें उपासना के आधार पर ही पाया जा सकता है, किंतु सच्ची उपासना वह है जो केवल उपासना के लिए निष्काम होकर की जाए।

निष्काम रूप से उपासना प्रारंभ कर परमात्मा से आत्मा का संबंध स्थापित करिए और श्रेष्ठताओं की उपलब्धि कर सुख-शांति के अक्षय आनंद से भरे जीवन और अनंत आनंद की परख कीजिए।

हमारा प्रत्येक भाव, विचार क्रिया और वस्तु उपासना का स्वरूप बन जाए—इस उच्च स्थिति को पाने तक हमारा पावन कर्त्तव्य है कि हम प्रतिदिन सच्चे और गहरे मन से परमात्मा की थोड़ी-थोड़ी उपासना तो करते ही चलें। यह थोड़ी-थोड़ी उपासना भी जब हमारे जीवन में अनिवार्य आवश्यकता बनकर हमें अपने अभाव में सताने लगेगी, तब इसी उपासना में एक आनंद, एक विह्वलता और एक कातरता का समावेश होने लगेगा। इस भावनासंपन्न संक्षिप्त उपासना का प्रभाव तब हमारे ऊपर लंबे समय तक बना रहेगा और हम उतनी देर तक परमात्मा का सामीप्य अनुभव करते रहेंगे। इसी प्रकार यह संक्षिप्त उपासना ज्यों-ज्यों परिपक्व तथा आत्मसात होगी त्यों-त्यों उसका प्रभाव विलंबित एवं स्थाई होता जाएगा और यदि उपासना में अपने हृदय की गहराई और ईमानदारी अधिकाधिक बढ़ाई जाती रहे, तो जरा भी असंभाव्य नहीं कि इसी संक्षिप्त उपासना द्वारा हम जल्दी ही उस कक्षा में जा पहुँचेंगे, जहाँ पहुँचकर स्वयं अपने साथ सारा संसार परमात्मामय और परमात्मा संसारमय गोचर होने लगता है। अपनी क्रिया-प्रक्रिया, भाव, विचार और श्वाँस-प्रश्वाँस तक परमात्मा रूप अनुभव होने लगते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह क्या प्रार्थना जो कष्ट की निवृत्ति और स्वार्थ की सिद्धि का उद्देश्य लेकर की जाए ? प्रार्थना तो वह है, जो तन्मयता और आनंद की अंतः संपदा को अधिकाधिक बढ़ाते चलने के लिए की जाती है। कष्ट निवृत्ति और स्वार्थ सिद्धि न होने पर प्रार्थना के बदले खीज उत्पन्न होती है, इससे लगता है उसका आधार ही गलत था। सच्ची प्रार्थना तो हमारी अपूर्णता का घट क्रमशः भरती ही जाती है। कल की अपेक्षा आज अपना अंतः पात्र भरा देखकर आनंद के उपासक को संतोष ही होगा सत्चित्त आनंद भरी सत्ता के निकट पहुँचने की चेष्टा में उपासना में निराशा और खीज कैसे हाथ लग सकती है ? आनंद की दिशा में बढ़ाया गया हर कदम तो सुखद ही होना चाहिए। आधार को विकृत कर लेने पर जो भटकाव आता है खीज उसी का प्रतिफल है।

प्रार्थना हमें ऊँचा उठाती है और उनसे मिलाती है, जो ऊँचे उठे हुए हैं। उपास्य ऐसा होना चाहिए जिसके समीप पहुँचने वाला रोना भूलकर मुस्कान सीखे ओर अपनी हँसी से समीपवर्ती वातावरण को हँसा दे।

अतृप्ति और व्यथा तो हमारे इष्ट नहीं है, फिर उन्हीं के आवाहन विसर्जन का अनुष्ठान क्यों किया जाए ? परमतत्त्व की ओर बढ़ते हुए हमारे प्रत्येक कदम सत्य के, शिव के सुंदर के अधिकाधिक निकट पहुँचते जाएँगे। तन्मयता और आनंद अपने आप में वरदान है। अतृप्ति का चिंतन इन दोनों अनुदानों की सहज प्राप्ति में अवरोध ही उत्पन्न करता है। यदि प्रार्थना ही करनी है तो क्यों न आनंद की, उल्लास को अपनाएँ और उसी के साथ एकाग्रता तन्मयता के सूत्र बाँधें।

प्रार्थना याचना नहीं हो सकती, उसमें समर्पण भरा रहता है। लोगों ने पाने का लाभ देखा है, पर देने का आनंद नहीं समझा। प्रभु को अपना आपा सोंपकर हमें सर्वोपरि दान का जो गौरव प्राप्त होता है उसकी तुलना उसी लाभ या संतोष के साथ नहीं हो सकती।

अपनी आकांक्षा हटने लगे और प्रभु की इच्छा उस स्थान को ग्रहण करने लगे, तो समझना चाहिए कि उसी अनुपात से प्रार्थना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफल हो रही है। प्रभु के दर्शन इसी रूप में होते हैं कि वे अंतःकरण की कुरूपता समेट लेते हैं और उस स्थान पर अपना सौंदर्य सँजो देते हैं। इसे और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो कष्ट निवृत्ति और स्वार्थ सिद्धि जैसे मनोरथों के स्थान पर उन उत्कृष्ट आदर्शों की स्थापना होती है, जो तन्मयता और आनंद के रूप में अनवरत् रूप से अपना सौरभ बिखेरते रहते हैं। प्रभु की इच्छाएँ अपनी मानकर अपनाने वाला और अनुसरण करने वाला देखता है कि परमतत्त्व स्वयं चलकर उसके समीप आ रहा है, उसकी यात्रा परिधि पूरी हो गई ?

किन शब्दों में प्रार्थना करें ? कहाँ बैठकर पुकारने से उसकी सुनवाई होती है ? इष्ट का दर्शन कहाँ पहुँचकर हो सकता है ? जैसे प्रश्नों के उत्तर किसी विधान या स्थान को तलाश करने से न मिल सकेंगे। वाणी उस तक नहीं पहुँचती। उपचार के पदार्थ भी इधर-इधर ही बिखर जाते हैं। स्थानों में प्रकृतिगत विशेषता हो सकती है, पर कहीं भी आत्मा का समाधान कर सकने वाला प्रकाश नहीं मिल सकता। आँखें जिसे देख ही नहीं सकतीं, उसका दर्शन किस जगह हो सकता है।

परमतत्त्व के सामीप्य के लिए सबसे निकटवर्ती स्थान अपना अंतःकरण ही है। वही अंतःकरण की पुकार से निकालने वाले मंत्रों की शक्ति ही काम करती है। आवश्यक नहीं कि शास्त्रों द्वारा सिखाए और गुरुजनों द्वारा बताए गए हों। आत्मा जब परमात्मा के निकट पहुँचती है, तो भाषा की परिधि टूट जाती है और मिलन की अनुभूति अपने आप ही श्रुतिशृंखला की तरह निनादित होने लगती है। अंतःकरण से बढ़कर साक्षात्कार का और कोई उपयुक्त स्थान नहीं। सही प्रार्थना वह है, जो कामनाओं को भावना में बदल दे। पाने की अपेक्षा देने की आतुरता जब मचलने लगे, तो समझना चाहिए उपास्य का अनुग्रह मूर्तिमान हो चला।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे परम प्रभु ! हमें पवित्र बना दो

ओ३म विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव।। ऋक् ५।२।५

हे सकल जगत के उत्पन्न करने वाले ईश्वर ! तू हम सब के पापों को दूर कर और जो कल्याणकारी विचार हैं, उन्हें हमें प्रदान कर। हे कृपानिधे ! हमारे अंतःकरणों को पवित्र कर, शुद्ध-बुद्ध और पवित्र बना।

ऋग्वेद की उपर्युक्त ऋचा में ऋषि ने परमात्मा से प्रार्थना की है। इसमें पहली माँग है कि हे परमपिता परमेश्वर पहले हमारे पापों को दूर कर दे। यह बात एक दम स्वाभाविक है कि यदि हम कोई चीज बाहर से कड़ी मेहनत के बाद कमाकर लाते हैं, तो उसके रखने की पहले सोचते हैं। उसके लिए जगह बनाते हैं। किसान जब फसल काटता है तथा अन्न निकाल लेता है, तब उस अन्न को जहाँ-तहाँ जैसे-तैसे नहीं फेंकता। उसको रखने के लिए महीनों पूर्व एक बखार के लिए घर की सफाई करता है, कोठिला या अन्नागार बनाता है, उसका नमी आदि जलाकर शोधन करता है। आजकल तो तरह-तरह की रासायनिक दवाएँ मिलने लगी हैं, अन्नागार या अन्न गोदाम के शोधन के लिए। इनमें रखे जाने वाले अन्न में कीड़े-मकोड़े नहीं लगते। वर्षा का पानी नुकसान नहीं करता तथा जो कुछ रखा जाता है, उसे हम अपनी इच्छानुसार सुरक्षित रख पाते हैं, किंतु यदि प्रमादवश उस गाढ़ी कमाई को जहाँ-तहाँ बिना सुरक्षा का ध्यान किए फेंक देंगे, तो परिणाम भी तत्काल भुगतना पड़ेगा। अन्न को कीड़े लग सकते हैं या सीलन से दाने सड़ने-घुनने लगते हैं। अतः महीनों जिसे कमाने में अपनी मेहनत लगाई, थोड़ी-सी सर्तकता न बरतने के कारण हम उसे गँवा बैठते हैं।

हमारे ऋषियों का यह पहला ध्यान रहा है कि ईश्वर भजन और तप से जो कुछ भी विचार की या बुद्धि की ऊर्जा वरदान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वरूप मिले, उससे पहले हे प्रभो ! हमारे संचित पापों को हमसे दूर कर दो। पाप तो हमारे मन की वृत्ति है। जो संस्कार स्वरूप हमारे अचेतन मन में दबे हैं। तथा जैसे ही अवसर आता है, वह अहंकार पर सवार होकर हमारी बुद्धि को भ्रमित कर देती है। जब बुद्धि भ्रमित हो जाएगी, तो हम उसी वृत्ति के अनुसार वैसे कर्म भी कर डालेंगे जो हमें स्वंय पसंद नहीं, किंतु लाचार हैं हम अपनी आदत से अतः ऋषि इस पाप की वृति से सजग है तथा सर्व शक्तिमान से पहला वरदान माँगते हैं कि प्रभो पहले हमें पाप और उसकी वृत्ति से मुक्त करो, क्योंकि जब तक पाप और उसकी प्रवृत्ति बनी रहेगी तब तक न हमसे भक्ति होगी न सद्कर्म।

पाप निवृत्ति के बाद ऋषि की प्रार्थना है कि कल्याणकारी विचार हमारे मन में जगें। जिनका अनुगमन कर हमारी कर्मेंद्रियाँ क्रिया स्वरूप कार्य करती हैं। यदि यह बुद्धि और विवेक सम्मत होगा, तो कल्याणकारी होगा या नहीं। किसी मानसिक आवेग से निकला होगा, तो कल्याणकारी होगा। ध्यान देने की बात है कि ऋषि ने मंत्र दर्शन करते समय समष्टि का ध्यान पहले रखा तथा जो कुछ भी प्रार्थना की वह बहुवचन में यानी समय समाज का प्रतिनिधि होकर न कि केवल अपने लिए। यह बात स्वाभाविक है कि जब सबका या पूरे समाज का कल्याण होगा, तो हम उससे बरी नहीं रहेंगे। अतः बसुधैव कुटुंबकम् की भावना अवश्य रही होगी। नहीं तो ऋषि कहते कि हे प्रभो केवल मुझ में ही अच्छे विचार जगें।

किंतु इस तरह की एकांगी प्रार्थना कर और वरदान पाकर क्या कोई सुखी रह सकता है ? कदापि नहीं। यदि अथाह धन कमाते जाएँ महल, अटारी उठाते जाएँ। मुझ में तो अच्छे विचार प्रभु कृपा से जगें, किंतु पड़ोसियों में पाप बढ़ता जाए तथा कुविचार उपजते जाएँ भक्त होने के बावजूद भी समाज के आचरण का भोग हमें भी भोगना ही पड़ेगा। पड़ौस के लोग हमारे धन से जलेंगे। हमारी आनंद की स्थिति से जलन करेंगे और किसी दिन महल में डाका डाल मुझे बरबाद कर सकते हैं, किंतु धन न बढ़ा तो क्या, लेकिन पड़ौस के सभी लोगों के विचार अच्छे हो जाएँ, सबमें अच्छी बातें आ जाएँ तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी गरीबी भी स्वर्ग ला देगी। हम सभी मिलकर आनंदपूर्वक पूरा जीवन बिता सकेंगे।

यह उदात्त मनः स्थिति है, मानव और पशु में भेद करती है। हमारा सारा सामाजिक ढाँचा ऋषि की केवल एक माँग पर अवस्थित है। यदि सद्विचार की भावना हमारे अंदर एकाएक गायब हो जाए, यह सारा का सारा वैभव नष्ट हो जाए। कोई विकास नहीं भी होगा। जैसा हम पशुओं में देखते हैं कि वहाँ अपने सामूहिक स्वार्थ की बात नहीं होती सभी अपने पेट के पीछे पड़े रहते हैं। ऐसे चींटी और मधुमक्खी इसके अपवाद हैं। दूसरी ओर मानव है। जुलाहा कपड़ा बुनता है, तकनीकी विकास करता है, सैनिक रक्षा करता है तथा समग्र राष्ट्र की रक्षा के लिए मरता जीता है, वैज्ञानिक रात-दिन एक कर अन्वेषण करते हैं तथा इसी प्रकार अन्य पेशा वाले दूसरों का काम करते रहते हैं। प्रत्यक्ष देखते हैं कि मानव समाज में हम एक-दूसरे की सेवा करते रहते हैं और परोक्षतः सबको आवश्यकतानुसार यथेष्ठ सहायता मिल जाती है। इस प्रकार समाज की गाड़ी चल रही है। हमारा विकास दिन-प्रति दिन हो रहा है। हमारी सुख-सुविधाएँ बढ़ रही हैं। इस सारे विकास का एकमात्र कारण है कि हमारे मन में कल्याणकारी विचार हैं।

किंतु जिस दिन मानव के हृदय से कल्याणकारी विचार उठ जाएँगे, हमारे मन में केवल कुत्सा संकीर्णता और घृणा जगह बना लेगी, तो विनाश होने से कोई बचा नहीं सकता। त्रेता में केवल रावण के कारण एक द्वीप की पूरी आबादी नष्ट हो गई। द्वापर में दुर्योधन के अंदर कुविचार उठने से महाभारत जैसा भयंकर युद्ध हुआ तथा प्रथम और द्वितीय महायुद्ध कुविचारों के ही परिणाम थे। अतः हमारे ऋषियों को पता था कि कल्याणकारी विचार के बदले कोई और चीज माँगी गई, तो वह भी निरर्थक है, क्योंकि उत्कृष्ट मनः स्थिति न होने पर प्रत्येक संपदा हमारे लिए विपत्ति का कारण बनेगी इसके विपरीत यदि सद्भावनाओं का बाहुल्य होगा, तो समस्त उपयोगी सुख-साधन स्वतः ही उपलब्ध होते चले जाएँगे। अतः केवल ऋषि ने एक ही माँग की कि प्रभो हममें यानी पूरे मानव समाज में कल्याणकारी विचार भर दो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुख्य पूँजी ऋषि ने माँगी कल्याणकारी विचार की, किंतु इस विचार वरदान का तभी फल होगा, जब पुनः इसको पाप-ताप से बचाकर पवित्रता और विवेक से रक्षा की जाए। हम बड़ी मेहनत से किसी ऐसे दुर्लभ पेड़ का बीज अपने घर लाए हैं। उसको अपने खेत में लगाकर उसका फल चखना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि उसके लिए उपयुक्त भूमि तैयार करें। फिर उसकी रक्षा की पूरी व्यवस्था करें। भूमि और रक्षा ही पर्याप्त नहीं है, सिंचाई का भी प्रबंध करें। अंत में ऋषि प्रभु से पुनः प्रार्थना करते हैं कि हमारी अंतरात्मा पवित्र बनी रहे। जब अंतःकरण शुद्ध रहेगा, तो जो कल्याणकारी विचार वरदान स्वरूप मिला है, उससे अच्छे कर्म फूटेंगे और जब सद्कर्म होंगे, तो पूरे समाज को अच्छा परिणाम भी मिलेगा। जिससे सभी सुखी और प्रसन्न होंगे, तो ही हमें भी वह प्रसाद अवश्य मिलेगा। अतएव हे परमपिता परमेश्वर हमारे अंतःकरण को पवित्र कर हमें शुद्ध-बुद्ध और पवित्र बना, यही सर्वोत्तम प्रार्थना है।

महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी समस्त संपत्ति को दोनों पत्नियों में बराबर बाँटकर गृह त्याग के लिए उद्यत हुए। मैत्रेयी को संतोष नहीं हुआ और आखिर वह पूछ ही बैठी "भगवान् ! क्या में इस सबको लेकर जीवन-मुक्ति का लाभ प्राप्त कर सकूँगी ? क्यों में अमर बन जाऊँगी ? आत्मतोष प्राप्त कर सकूँगी ?" महर्षि ने अपने चिंतन का क्रम तोड़ते हुए कहा—"नहीं, ऐसा नहीं हो सकेगा। साधन-सुविधा संपन्न सुखी जैसा तुम्हारा अब तक रहा इस तरह आगे भी चलता रहेगा, अन्य सांसारिक लोगों की तरह ही तुम भी अपना जीवन सुख-सुविधा के साथ बिता सकोगी।"

"मैत्रेयी का असंतोष दूर नहीं हुआ और वे बोलीं" **येनाहंनामृता स्याम किमहं तेन कुर्णम**" जिससे मुझे अमृतत्व प्राप्त न हो, उसे लेकर मैं क्या करूँगी ? देव मुझे यह साधन सुख-सुविधा संपन्न सांसारिक जीवन नहीं चाहिए।"

"तो फिर तुम्हें क्या चाहिए, मैत्रेयी ?" महर्षि ने पूछा। और मैत्रेयी की आँखों में अश्रुधार बह निकली। उसका हृदय संपूर्ण भाव से उमड़ पड़ा उस दिन मैत्रेयी ने महर्षि के चरणों में शिर झुकाते हुए कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतंगमय आविरावीर्मा एधि रुद्र यत्तेदक्षिण् मुखं तेन मां पाहि नित्यन्।"

"हे प्रभो मुझे असत्य से सत्य की ओर ले जाओ, अंधकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमृत्यु की ओर गति प्रदान करो ! हे प्रकाश ! आप चिर प्रकाश बनकर मेरे जीवन में प्रकाशित हो उठें। रुद्र बनकर मेरे समस्त पाप रूपी अंधकार का नाश कर दें। अपने प्रेम स्वरूप आनंदमय दर्शन देकर मुझे कृतार्थ करें, जिसकी छाया से मैं चिरकाल तक परित्राण प्राप्त करूँ।"

मैत्रेयी ने महर्षि के सान्निध्य में सुख समृद्धि संपन्नता का जीवन बिताया था, किंतु उसके अंतर का यह प्रश्न अभी तक अधूरा था उसका समाधान अभी तक नहीं हो पाया था।

हम जीवन भर नाना संपत्ति, ऐश्वर्य, वैभव एकत्र करते हैं आश्रम, धन, नाना पदार्थ, बहुमूल्य सामग्री जुटाते हैं और अंतर में स्थित मैत्रेयी को सौंपते हुए कहते हैं "लो ! इससे तुम्हें प्रसन्नता होगी आनंद मिलेगा।" अनेकानेक सामग्री हम जुटाते हैं, किंतु अंतर में बैठी हुई मैत्रेयी कहती ही रहती है **'येनाहं नामृता स्याम किमहं तेन कुर्यामि।"** इन सब सामग्रियों में जीवन के शाश्वत प्रश्न का समाधान नहीं मिलता और वह निरंतर छटपटाती रहती है, उस महत्त्वपूर्ण तथ्य की प्राप्ति के लिए जो उसे सत्य, ज्योतिर्मय अमृतत्व की प्राप्ति करा सके। सब ओर से उसे परित्राण देकर आनंदमय बना सके।

मैत्रेयी चाहती थी उस परम तत्व का साक्षात्कार, एकानुभूति नित्य दर्शन जो सत्य, ज्योतिर्मय स्वरूप हैं, जो उसके जीवन का चित्र-प्रकाश बने। रुद्र बनकर उसके समस्त पापों को नष्ट कर दे और उसे परित्राण देकर निर्भय बना दे।

मैत्रेयी ने अपने अनुभव की कसौटी पर जान लिया था संसार और इसके सकल पदार्थ, संबंध नाते रिश्ते मरणशील हैं, इनका पर्यवसान अंधकार और असत्य में होता है, दैहिक, दैविक, भौतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाप तापों की पीड़ा जीव को सदा ही अशांत भयभीत बनाए रखती है।

मनुष्य नाना पदार्थ, उपकरण आदि संग्रह करता है। धन संपत्ति जुटाता है। बड़े-बड़े महल बनाता, देह को नाना भाँति सँजोता सँवारता है। रात-दिन इन्हीं को आधार बनाकर जुटे रहने से इनके प्रति मनुष्य में एक तरह की आसक्ति एवं ममता उत्पन्न हो जाती है। धीरे-धीरे यह अभ्यास प्रगाढ़ हो जाता है कि मनुष्य इन्हीं उपकरणों, सामग्री, संबंधों को सब कुछ मान इन्हीं का अवलंबन लेकर चलने लगता है, किंतु संसार के नियम के अनुसार ये मिट्टी के घरौंदे क्षण-क्षण मे गिरते पड़ते रहते हैं। परिवर्तित होते रहते हैं। संसार और इसके पदार्थ बनते-बिगड़ते रहते हैं। कोई भी तो स्थिर नहीं रहता। मनुष्य का शरीर ही वृक्ष के पत्ते की तरह एक दिन झड़े जाता है। वह भी स्थिर नहीं रहता। जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब ही तो असत्य है मरण-धर्म है अंधकार मय है।

मनुष्य इनका अवलंबन लेकर क्षण-क्षण इनके वियोग, रूपांतर, परिवर्तन के साथ-साथ ही मृत्यु का अनुभव करता है। जिसे सत्य मान लिया गया था, वे स्वप्न की तरह असत्य सिद्ध होते हैं। कृत्रिम प्रकाश के बुझ जाने पर अंधकार के सिवा कुछ भी नहीं रहता मनुष्य क्षण-क्षण मृत्यु, असत्य और अंधकार में ही भटकता रहता है। भय, आशंका क्लेश, पाप ताप उसे क्षण भर भी तो स्थिर नहीं रहने देते। यह आवर्तनशील क्रम चलता ही रहता है और इसका कोई अंत नहीं होता।

इसीलिए मैत्रेयी को इन सब वस्तु, पदार्थ, संपत्ति समृद्धि के परे किसी ऐसी वस्तु की अभिलाषा भी थी, जो इस तरह मरण धर्म से अंधकार से सर्वथा मुक्त हो। जिसे तृप्त करने के बाद फिर छोड़ने या बदलने का कोई प्रश्न ही उपस्थित न हो। जो मृत्यु से अतीत, सत्य, ज्योतिर्मय, दिव्यरूप हो। ऐसा अमृतत्व चाहती थी मैत्रेयी।

लेकिन हम शक्ति और युक्ति द्वारा संसार के पदार्थों में उसे ढूढ़ते हैं, नाप-जोख करते हैं। नाना साज समान एकत्र करते हैं और अंतर में विराजमान मैत्रेयी से कहते हैं "लो देवि ! इन्हें ग्रहण करो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सुखपूर्ण जीवन बिताओ'' किंतु वह हर बार अपना असंतोष प्रकट करते हुए पूछती "क्या इससे मुझे अमृतत्व की प्राप्ति हो सकेगी।'' नहीं ?'' तो फिर जो मैं चाहती हूँ, वह तो यह नहीं है। **'येनाह नामृता स्याम किमहं तेन कुर्याम्।''** जिससे मुझे अमृतस्वरूप की उपलब्धि न हो उसे लेकर मैं क्या करुँगी और वह नित्य निरंतर ही अश्रु भरे नेत्रों और व्याकुल हृदय से प्रार्थना करती है।

''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय आविरावीर्मा एधि रुद्र यत् दक्षिणनुख तेन माँ पाहि नित्यं।।''

हे चिरंतन सत्य ! मेरे अंतर और बाह्य सर्वत्र ही विराजमान सत्य मुझे असत्य की सीमा से निकाल कर अपने में लो। जग के असत्य पर्दों को हटाकर अपने सत्य स्वरूप भवन में ले चलो जहाँ 'आप हैं' के सिवा कुछ भी तो नहीं है।

'ज्योतिषाँ य ज्योतिं' सर्व लोकों में ज्योतितों की भी परम ज्योति ! कोटि-कोटि सूर्य सम श्राप की परम ज्योति व्याप्त है। हे ज्योतिर्मय ! अपने पावन स्पर्श से मुझे भी ज्योतिर्मय बना दें, जिससे अंधकार के समस्त परिवेष्टनों से मुक्त होकर मैं भी ज्यतिर्मय बनूँ।

हे अमृत ! रस ! परमानंद के धाम ! सर्वत्र आप ही अजर-अमर अविनाशी बन व्याप्त है। यह जगत आप में ही धारण, पोषण, विनाश प्राप्त करता है, किंतु आप सदा-सदा गंभीर स्तब्ध एक रस बने रहते हैं। आपका कोई रूप सीमा आयु नहीं। अपने इस अमृत स्वरूप में मिलाकर मुझे भी अमर्त्य बनावें।

"हे प्रकाश ! मुझे अपने प्रकाश से जगमग, जगमग कर दो। अपनेपन, अहंकार राग आसक्ति के समस्त अंधकार का उच्छेद करके पूर्णरूपेण प्रकाश मय कर दो।

'हे रुद्र ! अपने पचंड ताप से मेरे समस्त पापों को भस्मीभूत कर दो मेरे अंतर बाह्य जीवन में जो भी दुश्चेष्टा, दुर्भावना, दुष्कर्म, आदि पाप हों उन्हें अपने रुद्र ताप से नष्ट कर दें, तब आपके आलोक प्रकाश की निर्विकारी सत्ता ही मुझ में शेष रहेगी। हे प्रभो ! आप अपने प्रसन्न, मधुर, आनंदमय दर्शन देकर मुझे कृतार्थ करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे देव ! तब मैं आपका ही निवास बनकर सर्व ओर से परित्राण पा सकूँगी।'

अंतर में विराजमान मैत्रेयी—अंतरात्मा की इस प्रार्थना को हम एकाग्रता के साथ सुनें। उसके स्वरों में स्वर मिलाकर गावें। प्रबल जिज्ञासा उष्कृष्ट इच्छा, अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ ही हमारी यह प्रार्थना किसी तरह की सौदेबाजी, लेन-देन या सँजोकर रखने की बात न ही बीच में संसार के विचरण करते हुए हम उसी को ग्रहण करें, जो हमारी आत्मा की चिर इच्छा को पूर्ण करे। उसे सत्य अमृत-ज्योति की प्राप्ति करावें, जो हमें अमर्त्य प्रदान न करें उसे छोड़ते जाएँ।

'येनाहं नासृता स्याम किमहं तेन कुर्याम' यह मंत्र हमारा जीवन मंत्र बन जाए।

आज का मनुष्य औरों की अपेक्षा अपने प्रति अधिक भयानक हो गया है। उसने अपने हृदय में द्वेष, द्वंद्व, छल-कपट, ईर्ष्या और मत्सरता के इतने बीज बो लिए हैं कि उसकी सुगंधित हृदय-वाटिका विषैली वनस्थली बन गई है। इसका मुख्य कारण है उसकी काम शक्ति।

जो मनुष्य जितनी अधिक कामना रखता है, वह उतना ही अधिक दरिद्र रहता है। उसकी व्याग्रता उतनी ही बढ़ जाती है, उसका मन विविध तृष्णाओं की ओर दौड़ता रहता है, मनुष्य की विषय विविधता ही उसको पतन की ओर ले जाती है और पतनोन्मुख मनुष्य से किसी सदाशयता की आशा नहीं की जा सकती, उसका संतोष नष्ट हो जाता है और इस प्रकार उसे संसार में सभी प्राणी अपने से अधिक सुखी दिखाई देते हैं, जिससे उसे औरों से ईर्ष्या और अपने से खीज होने लगती है। वह हर समय हर बात पर असंतुष्ट रहता है, जिससे उसमें क्रोध का बाहुल्य हो जाता है। क्रोध से, विवेक के विनाश से वह सर्वनाश की ओर बड़ी तीव्र गति से अग्रसर हो पड़ता है।

मनुष्य को अपना विनाश रोकने के लिए कामनापूर्ण विषय वृत्ति को रोकना चाहिए। इसके विषय में प्रकृति का कुछ ऐसा नियम है कि विषयों को जितना संतुष्ट करने का प्रयत्न किया जाता है, वे उतने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही अधिक बढ़ते हैं। अस्तु इनका त्याग ही इनसे पीछा छुड़ाने का एक मात्र उपाय है।

विषय-वासनाएँ हाथ में पकड़ी हुई छड़ी की तरह तो हैं नहीं कि हाथ खोल दीजिए वह स्वतः गिर जाएँगी। यह जन्म-जन्मांतर का कलुष है, जो मनोदर्पण पर संचित होकर स्थाई बन जाता है। इसे मल-मल कर ही धोना पड़ेगा। जिस प्रकार मैल को मैल से साफ नहीं कर सकते, उसी प्रकार विषयों को वासनात्मकता से नहीं धोया जा सकता। इनको धोने के लिए निर्मल भावनाओं की आवश्यकता होगी।

निर्मल भावनाओं में करुणा की भावना सर्वोत्कृष्ट है। मनुष्य को अपने अधिक से अधिक करुणा का स्फुरण करना चाहिए। करुणा एक दैवी गुण है 'आत्म का प्रकाश है। इसकी उत्पत्ति होते ही मनुष्य के सारे मानसिक मल धुल जाते हैं और उसका हृदय-दर्पण अपनी स्वर्गीय छटा से चमक उठता है, जिसमें वह आत्मा रूप परमात्मा का दर्शन कर सकता है।

इस करुणा को प्रस्फुटित करने के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम विनम्रतापूर्ण दया दाक्षिण्य की उपासना करनी होगी। संसार का कोई भी धर्म अथवा मत-मतांतर ऐसा नहीं है, जिसमें विनम्रता दया, क्षमा, सहानुभूति आदि गुणों को महत्ता न दी गई हो।

करुणा लाने के लिए मनुष्य को करुणा-वरुणालय भगवान का आश्रय लेना होगा। विनम्रतापूर्वक उसकी शरण में जाना होगा, प्रेमपूर्वक उसकी सृष्टि को दया से ओत-प्रोत करना होगा। विनम्रता को अपनाना होगा।

यह सारे गुण परमात्मा को आतुर कातरतापूर्वक स्मरण करने से अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं। उसे याद करिए, पुकारिए, अपनी याद दिलाइए, उसकी अनुनय-विनय करिए।

सांसारिक व्यक्तियों की अनुनय-विनय करने से जो दैन्य मनुष्य में आता है, वह आत्मा को कलुषित और निर्बल बनाता है, किंतु इसके विपरीत परमात्मा की अनुनय-विनय करने से जो दैन्य प्राप्त होता है, उससे आत्मा का परिमार्जन होता है, उसमें प्रकाश आता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने अनुनय-विनय में यदि आप परमात्मा से भौतिक सुख साधनों की याचना करेंगे, तो फिर अपने ध्येय मार्ग करुणा की प्राप्ति से विचलित हो जाएँगे। पुनः उन्हीं विषय वासनाओं की ओर उन्मुख हो चलेंगे, जिन्हें छोड़ने के लिए आपने परमात्मा की पुकार प्रारंभ की है। यदि याचना ही करना है तो केवल अपने ध्येय की याचना करें अन्यथा एकमात्र उसकी प्रसन्नता के लिए प्रार्थना करिए। उसकी कृपा कोर से क्या लौकिक क्या पारलौकिक कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है जिसकी उपलब्धि न हो पावे, किंतु फिर भी उसकी दी हुई उपलब्धियों में से आप केवल महान् गुण संपत्ति को ही आकर्षित करिए उन्हें अधिक से अधिक प्राप्त करने की कोशिश कीजिए।

परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए प्रार्थना सबसे सरल साधन है। एक निश्चित समय पर पवित्र तन-मन से उसे विह्वलतापूर्वक याद करते हुए कातर वाणी से उसकी प्रार्थना कीजिए। प्रार्थना के शब्द अधिक से अधिक करुणाजनक, सरल एवं सरस हों और उनका तात्पर्य तो नितांत पवित्र निष्काम और उसके उदार नामों से परिपूर्ण हो। उनके अर्थों से एक निस्पृह आनंद का उद्रेक होता है। उसको संगीत सहज गेय और मनोहर हो, प्रार्थनाएँ की तो गद्य में भी जा सकती हैं, किंतु भावना की अभिव्यक्ति जितनी सुंदरता से पद्य में होती है उतनी गद्य में नहीं। आपकी प्रार्थना में हृदय के भावों की जितनी तीव्र समाविष्टि होगी, जितनी तन्मयता होगी उतना ही शीघ्र आप उस परमप्रभु की करुणा और कृपा को प्राप्त कर लेंगे।

प्रार्थना अधिक जोर से गाने की आवश्यकता नहीं। उसको ऐसे सम-स्वर से गाइए जिससे आपके कंठ को न तो अधिक श्रम करना पड़े और वह आपको स्वयं स्पष्टतया सुनाई भी दे।

प्रार्थना करते समय हर ओर से निश्चिंत रहिए और समस्त संसार को भुलाकर एकाग्रचित से तन्मय होइए कि उस समय आपके लिए एक प्रार्थना के अतिरिक्त और कुछ शेष न रह जाए। प्रार्थना में एकाग्रता मूल मंत्र है।

आज जितनी विह्वलता से परमात्मा को याद करेंगे, उतनी आतुरता से वह आपका स्मरण करेगा। आज ज्यों-ज्यों उसकी ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकर्षित होंगे त्यों-त्यों वह आपकी ओर आकर्षित होगा। इस प्रकार दोनों ओर का पारस्परिक आकर्षण बीच में व्यवधान और दूरी को बहुत शीघ्र समाप्त कर देगा और आप आत्मा में आनंद के रूप में उसका साक्षात्कार कर सकेंगे।

उपासना में प्रार्थना का बहुत बड़ा महत्त्व है। संसार का कोई भी ऐसा महात्मा अथवा धर्म-प्रवर्तक नहीं हुआ, जिससे किसी न किसी रूप में परमात्मा की प्रार्थना न की हो। यहाँ तक कि देवतागण भी एक-दूसरे की प्रार्थना करते रहते हैं। विष्णु महेश की, महेश विष्णु की, ब्रह्मा विष्णु दोनों महेश की तो ब्रह्मा की प्रार्थना विष्णु और महेश किया करते हैं। बिना परमात्मा की प्रार्थना किए कोई भी ध्येय पूरा नहीं हो सकता। महात्मा गाँधी कहा करते थे कि—"प्रार्थना मेरा प्राण है, जीवन है। मैं भोजन छोड़ सकता हूँ, पानी छोड़ सकता हूँ, संसार की सारी चीजें छोड़ सकता हूँ, किंतु प्रार्थना नहीं छोड़ सकता। प्रार्थना करने से मैं अपने अंदर एक सुख, शांति शक्ति और संपूर्णता का अनुभव करता हूँ। जिस दिन प्रार्थना में विलंब हो जाता है या किसी कारणवश नहीं कर पाता हूँ, वह दिन मेरे लिए सबसे खराब दिन होता है, मुझे लगता है जैसे में निर्जीव हो गया हूँ, अशक्त हो गया हूँ, न मैंने कुछ किया है और न कुछ कर सकता हूँ। अपने अंदर एक भयानक खोखलापन पाने लगता हूँ और प्रार्थना कर लेने पर तत्काल सारी दुर्बलताएँ दूर हो जाती हैं और अपने अंदर फिर पूर्णता का अनुभव करने लगता हूँ।" उनका कहना था कि—"मैं सारे दुःख, सारे कष्ट और सारे संघर्ष प्रार्थना के बल पर ही हँसते-हँसते सहन कर लेता हूँ।" मुझे कभी आभास नहीं होता कि मैं किसी संघर्ष अथवा दुःख में हूँ। हर प्रकार से प्रसन्न और प्रफुल्लित रहता हूँ।"

कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रार्थना में सारी शक्तियाँ और सारे सुख सन्निहित रहते हैं। महात्मा गाँधी की सफलता के सारे कारणों में प्रभु प्रार्थना एक प्रमुख कारण हैं। इसी के बल पर उन्होंने इतने बड़े राष्ट्र का नेतृत्व किया, स्वतंत्रता का संग्राम जीता और विविध धर्मावलंबियों को एकता के सूत्र में बाँध दिया। उन्होंने इस प्रार्थना के बल पर ही बड़े-बड़े भौतिकवादी विदेशी राजनीतिज्ञों को द्रवित करके झुका दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा का करुण वरदान प्राणिमात्र को उपलब्ध होता है। बिना किसी भावना के परमेश्वर प्रत्येक जीव पर अपनी अनंत करुणा बिखेरता रहता है। प्राणियों के सुख की अभिवृद्धि और कष्टों की निवृत्ति के लिए उसने अनेक प्रकार के अनुदान पग-पग पर प्रस्तुत किए हैं। उन्हीं के सहारे जीवधारियों की जीवन-लीला चल पाती है। शरीर और मन की विलक्षण रचना इतने उत्तम प्रकार से न हुई होती, तो जीवों का अस्तित्व ही प्रकट न हो पाता और वे आनंदपूर्ण रीति से जीवन का रसास्वादन कर सकने में समर्थ न हुए होते। एक शब्द में इसको यों भी कहा जा सकता है कि परमप्रभु की अनुकंपा के सहारे ही जीवधारी अपना शील क्षेम करते हुए, सरस जीवन बिता रहे हैं।

प्रभु की अनंत अनुकंपा और करुणा प्राप्त करने वाले मनुष्य के लिए यह उचित है कि वह उस अनुदान का अंश दूसरे असहाय, असमर्थ और पिछड़े हुओं को प्रदान कर अपनी सत्पात्रता सिद्ध करता रहे। यह ठीक है कि परमात्मा को उसकी करुणा का बदला नहीं चुकाया जा सकता, पर इतना तो हो ही सकता है कि उसकी दुर्बल संतानों को सुखी और समुन्नत बनाने के लिए हम आवश्यक सहृदयता का परिचय देते रहें और अपने से जो बन पड़े लोक कल्याण के लिए प्रयत्न करते रहें।

करुणा की सहानुभूति और सहृदयता का रूप मिलना ही चाहिए। भावना वही सार्थक है, जो कार्यान्वित हो सके। संसार में पीड़ा बहुत है, यदि हम दूसरों की पीड़ा का एक अंश बँटा सकें और अपनी सद्भावना से टूटे हृदयों को जोड़ सकें, तो यह मानवोचित महानता ही होगी। ईश्वर प्रार्थना केवल पूजा के समय प्रकट किए जाने वाले, गुनगुनाए या दुहराए जाने वाले शब्दों को ही नहीं कहते। सच्ची प्रार्थना वह है, जो चिरस्थाई सद्भावना का रूप धारण कर प्राणी मात्र की कामनाओं के लिए सहानुभूति बनकर विचलित होती है।

हम प्रभु से प्रार्थना करें—करुणा पूर्ण भावना के साथ और उनसे एक ही याचना करें कि हमारी अंतरात्मा में उस करुणा का एक छोटा-सा झरना प्रस्फुटित करें, जिसमें वे प्राणी मात्र को स्नान कराके उन्हें निरंतर सुखी, समृद्ध और सुविकसित बनाते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर सर्व शक्तिमान है और उस सर्वशक्तिमान सत्ता से मनुष्य इसीलिए संबंध संपर्क जोड़ना चाहता है कि वह उसका लाभ अपने स्वार्थ को पूरा करने में उठा सके। यही कारण है कि मनुष्य इस सर्वशक्तिमान सत्ता के अति निकट रहते हुए भी जैसा का तैसा बना रहता है और अपना मूल्य ईश्वर की दृष्टि में गिरा देता है।

किसी बड़े और प्रतिष्ठित व्यक्ति की गरिमा के अनुरूप ही उससे सहयोग प्राप्त करने की आशा की जाती है और उसके सामने वैसी ही प्रार्थना प्रस्ताव लेकर प्रस्तुत हुआ जाता है, परंतु लोग अपनी क्षुद्र कामनाओं तथा तुच्छ इच्छाओं को लेकर ईश्वर के पास पहुँचने की बात सोचते हैं तथा उन्हें पूरी करने की प्रार्थना करते हैं।

प्रार्थना—ईश्वर से कुछ माँगना नहीं है, परंतु लोग यही समझते हैं कि प्रार्थना के द्वारा ईश्वर से पुत्र-कुल, धन वैभव, यश-मान, माँगा जा सकता है। यह विपर्यय प्रार्थना का अर्थ न समझ पाने के कारण ही होता है। ईश्वर अपने प्रिय पुत्र को जो कुछ दे सकता है, वह श्रेष्ठतम रूप में दे चुका, अब वह देखना चाहता है कि उसके पुत्र ने उन उपहारों का मूल्य समझा अथवा नहीं। वह उपलब्ध साधन और शक्तियों का श्रेष्ठतम उपयोग करने में समर्थ हो सका है या नहीं ? उसके बाद भी वह अपने पुत्र को रोते गिड़गिड़ाते, मनुहार करते देखता है और इससे कोई क्षोभ होता होगा, तो यही होता होगा कि सृष्टि में अन्य प्राणियों की तुलना में उसे दिए गए सारे उपहार व्यर्थ हो गए, क्योंकि वह उनका मूल्य नहीं पहचान सका।

किसी भक्त के संबंध में यह प्रसिद्ध है कि उसके गुरु ने उसे कुछ समय के लिए पारस पत्थर देकर यह कहा था कि वह इससे अपनी गरीबी दूर कर ले। भक्त जानता नहीं था कि पारस पत्थर का क्या उपयोग किया जाए ? इसलिए साल भर तक वह पत्थर से तौलने का काम ही लेता रहा। साल भर बाद जब गुरु लौटा, तो वह सोचता था कि मेरा भक्त अब तो काफी संपन्न हो गया होगा, परंतु उसे देखकर निराशा ही हुई कि भक्त अभी भी मैली-कुचैली दुकान पर बैठा चीजें तौल रहा है और अपनी गरीबी का रोना रो रहा है। यह पूछा जाने पर कि पारस का क्या किया ? शिष्य का उत्तर था, उससे कोई वस्तु तौलने में बड़ी सुविधा रही। इससे पहले वह ईंट-पत्थर के टुकड़ों से ही चीजें तौला करता था, अतः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाई होती थी। यह पत्थर आ जाने से उसे तौलने में बड़ी सुविधा होने लगी है।

देखकर गुरु को अपने शिष्य की बुद्धि पर बड़ा तरस आया और वैसा ही परमात्मा को भी मनुष्य पर आता होगा, जब वह इतनी श्रेष्ठतम वस्तुएँ, समर्थ साधन और प्रचुर सामर्थ्य देने के बाद भी मनुष्य को रोता-झीकता देखता है। निश्चित ही यह सुविधा-साधन इसलिए मिले हैं कि इनके सहारे वह अपना जीवन सरलतापूर्वक चलाए और सृष्टि-उपवन की शोभा सुंदरता को बढ़ाए।

प्रार्थना इस आत्मिक दैत्य के निवारण और परमपिता परमात्मा से निकट संपर्क संबंध सान्निध्य स्थापित करने के लिए ही की जानी चाहिए जिसका कि वह सनातन अंश हो। जिसका वह अंश हो, उससे तादात्म्य स्थापित कर, वह भी उसी के समान समर्थ बन सकता है। छोटे-छोटे नाले-नदियों में मिलकर स्वयं भी नदी स्वरूप हो जाते हैं। आग में पड़कर ईंधन अग्नि स्वरूप हो जाता है, नदियाँ सागर में मिलकर सागर ही हो जाती हैं। नालों का नदी से संयोग, नदी का सागर से मिलन और ईंधन का अग्नि में प्रवेश उन्हें उसी रूप में परिणत कर देती है, ठीक उसी प्रकार प्रार्थना भी मनुष्य को उसके अंतिम लक्ष्य से मिला देती है। विराट से क्षुद्र का संयोग गति के माध्यम से ही होता है। प्रार्थना को भी गति कहा जा सकता है जो क्षुद्र से महान, अणु से विराट तथा जीव से ब्रह्म की ओर चलती है। यही प्रार्थना का अर्थ है याचना नहीं इस प्रार्थना में शक्ति है।

❐ ❐

सही प्रार्थना-उपासना से सुनिश्चित सत्परिणाम

प्रार्थना ईश्वर के बहाने से ही की जाती है। ईश्वर सर्वव्यापी और परम दयालु है। उसे हर किसी की आवश्यकता और इच्छा की जानकारी है। वह परमपिता और परमदयालु होने के नाते हमारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोरथ पूरे भी करना चाहता है। कोई सामान्य स्तर का सामान्य दयालु पिता भी अपने बच्चों की इच्छा आवश्यकता पूरी करने के लिए उत्सुक एवं तत्पर रहता है, फिर परमपिता और परमदयालु होने पर वह क्यों हमारी आवश्यकता को जानेगा नहीं। वह कहने पर ही हमारी बात जाने और प्रार्थना करने पर ही कठिनाई को समझे, यह तो ईश्वर के स्तर को गिराने वाली बात हुई। जब वह कीड़े-मकोड़ों और पशु-पक्षियों की अयाचित आवश्यकता भी पूरी करता है तब अपने परम प्रिय युवराज का ध्यान क्यों न रखेगा ? वस्तुतः प्रार्थना का अर्थ याचना है ही नहीं। याचना अपने आप में हेय है क्योंकि दीनता असमर्थता और परावलंबन की प्रवृत्ति उसमें जुड़ी हुई है, जो आभा का गौरव बढ़ाती नहीं घटाती ही है। चाहे व्यक्ति के सामने हाथ पसारा जाए या भगवान के सामने झोली फैलाई जाए, बात एक बात ही है। चाहे चोरी किसी मनुष्य के घर में की जाए, चाहे भगवान के घर मंदिर में, बुरी बात तो बुरी हो रहेगी। स्वावलंबन और स्वामिघातक को आघात पहुँचाने वाली प्रक्रिया, चाहे उसका नाम प्रार्थना ही क्यों न हो, मनुष्य जैसे समर्थ तत्व के लिए शोभा नहीं देती।

वस्तुतः प्रार्थना का प्रयोजन अपने आत्मा को ही परमात्मा का प्रतीक मानकर स्वयं को समझाना है कि वह इसका पात्र बने कि आवश्यक विभूतियाँ उसे उसकी योग्यता के अनुरूप सहज ही मिल सकें। यह अपने मन की खुशामद है। मन को मनाना है। आपे को बुहारना है। आत्म-जागरण है। आत्मा से प्रार्थना के द्वारा कहा जाता है, हे शक्ति पुंज तू जागृत क्यों नहीं होता अपने गुण, कर्म स्वभाव को प्रगति के पथ पर अग्रसर क्यों नहीं करता ? तू सँभल जाए तो सारी दुनियाँ सँभल जाए। तू निर्मल बने तो सारे संसार की निर्मलता खिचती हुई अपने पास चली आए। अपनी सामर्थ्य का विकास करने में तत्पर और उपलब्धियों का सदुपयोग करने में सलंग्न हो जाए, तो दीन-हीन अभावग्रस्तों की पंक्ति में क्यों बैठना पड़े ? फिर समर्थ और दानी देवताओं से अपना स्थान नीचा क्यों रहे ?

प्रार्थना के माध्यम से हम विश्वव्यापी महानता के साथ अपना घनिष्ठ संपर्क स्थापित करते हैं। आदर्शों को भगवान की दिव्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभिव्यक्ति के रूप में अनुभव करते हैं और उसके साथ जुड़ जाने की भाव-विह्वलता को सजग करते हैं तमसाच्छन्न मनोभूमि में अज्ञान और आलस्य ने जड़ जमा ली है। आत्म विस्मृति ने अपना स्वरूप एवं स्तर ही हेय बना लिया है। जीवन में संव्याप्त इस कुत्सा और कुंठा का निराकरण करने के लिए अपने प्रसुप्त अंतःकरण से प्रार्थना की जाए कि यदि तंद्रा और मूर्छा छोड़कर तू सजग हो जाए और मनुष्य को जो सोचना चाहिए, वह सोचने लगे जो करना चाहिए सो करने लगे, तो अपना बेड़ा पार हो जाए। अंतःज्योति की एक किरण उग पड़े तो पग-पग ठोकर लगने के निमित्त बने हुए इस अंधकार से छुटकारा ही मिल जाए, जिसने शोक-संताप की विडंबनाओं को सब ओर से आवृत्ति कर रखा है।

परमेश्वर यों साक्षी इष्टा नियामक उत्पादक संचालक सब कुछ हैं, पर उसके जिस अंश की हम उपासना प्रार्थना करते हैं, वह सर्वात्मा एवं पवित्रात्मा ही समझा जाना चाहिए। व्यक्तिगत परिधि को संकीर्ण रखने और पेट तथा प्रजनन के लिए ही सीमाबद्ध रखने वाली वासना तृष्णा भरी मूढ़ता को ही माया कहते हैं। इस भव-बंधन से मोह ममता को छुड़ाकर आत्म-विस्तार के क्षेत्र को व्यापक बना लेना यही आत्मोद्धार है। इसी को आत्म-साक्षात्कार कहते हैं। प्रार्थना में अपने उच्च आत्म-स्तर से परमात्मा से यही प्रार्थना की जाती है कि वह अनुग्रह करे और प्रकाश की ऐसी किरण प्रदान करे, जिससे सर्वत्र दीख पड़ने वाला अंधकार, दिव्य प्रकाश के रूप में परिणत हो सके।

लघुता को विशालता में, तुच्छता को महानता में समर्पित कर देने की उत्कंठा का नाम प्रार्थना है। नर को नारायण, पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने का संकल्प प्रार्थना कहलाता है। आत्मा को आबद्ध करने वाली संकीर्णता जब विशाल व्यापक बनकर परमात्मा के रूप में प्रकट होती है, तब समझना चाहिए प्रार्थना का प्रभाव दीख पड़ा नर-पशु के स्तर से ऊँचा उठकर जब मनुष्य देवत्व की ओर अग्रसर होने लगे, तो उसे प्रार्थना की गहराई का प्रतीक और चमत्कार माना जा सकता है। आत्म-समर्पण को प्रार्थना का आवश्यक अंग माना गया है। किसी के होकर ही हम किसी से कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने को समर्पण करना ही ईश्वर के प्रति हमारे समर्पित होने की विवशता का एक मात्र तरीका है। शरणागति भक्ति का प्रधान लक्षण माना गया है। गीता में भगवान ने आश्वासन दिया है कि जो सच्चे मन से मेरी शरण आता है, उसके योग क्षेम की—सुख-शांति और प्रगति की जिम्मेदारी मैं उठाता हूँ। सच्चे मन और झूँठे मन की शरणागति अंतर स्पष्ट है प्रार्थना के समय तन, मन, धन सब कुछ भगवान के चरणों में समर्पित करने की लच्छेदार भाषा का उपयोग करना और तब पल्ला झाड़कर अलग हो जाना झूँठे मन की प्रार्थना है। आज इसी का फैंशन है। जिस तरह व्यभिचारी किसी भोली लड़की को फँसाने के लिए लंबे-चौड़े सब्ज बाग दिखाता है और यह जानते हुए कि यह आश्वासन मुझे पूरे करने नहीं है, बड़े-बड़े विश्वास दिलाता है, कसमें खाता है उसी प्रकार झूठे मन से की हुई प्रार्थना ईश्वर को ठगने बहकाने के लिए होती है। समर्पण जैसे दिव्य स्तर का जो अर्थ समझता होगा, वह इतना भी जानता होगा कि उसका तात्पर्य अपनी लिप्साओं को भगवान की इच्छाओं में परिणत कर देने—गति-विधियों को तृष्णा वासना के चुंगल से छुड़ाकर ईश्वर की इच्छानुसार उत्कृष्ट विचारणा तथा आदर्शवादी क्रिया पद्धति से अपने वर्तमान ढाँचे को बदलना ही होता है। जो इसके लिए तैयार होकर समर्पण शरणागति की बात करे, उसी को सच्चे मन से प्रार्थना करने वाला कहा जाएगा।

एक गरीब ने नशे में धुत्त होकर किसी के हाथों अपना मकान सस्ते दामों में बेच डाला, होश आया तो अदालत में अर्जी दी कि नशे से होश-हवास ठीक न होने के कारण वह बिक्री की थी। अब होश आने पर उस इकरारनामे से इनकार करता हूँ। पूजा, प्रार्थना के समय लोग न जाने क्या-क्या स्तुति प्रार्थना करते हैं। मैं तेरी शरण में आया हूँ, तेरा ही हूँ, तेरे चरणों में पड़ा हूँ, मेरा तो तू ही है तेरे सिवा मेरा कौन है ?' आदि-आदि। वे इन शब्दों का अर्थ भी नहीं समझते और न फलितार्थ। जो शब्द कहे जा रहे हैं यदि वे समझ-बूझकर-होश-हवाश में कहे गए होते, तो जरूर उस स्थिति के अनुरूप जीवन क्रम ढालने और विचारों कार्यों में उनका समावेश करने का प्रयत्न किया गया होता। पूजा-स्थल से निकलते ही—जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस प्रार्थना कथन को कार्यान्वित होने की आवश्यकता अनुभव होती है, तब सब कुछ बहुत कठिन प्रतीत होता है। होश में आए हुए शराबी की तरह तब उस कथनी को करनी में परिणत न कर सकने की हिम्मत न होने से यही कहना पड़ता है कि उस इकरारनामे से इनकार करता हूँ, जो पूजा के समय सब कुछ भगवान को समर्पण करने वाली शब्दावली के साथ कहा गया था।

प्रार्थना में यही कामना जुड़ी रहनी चाहिए कि परमात्मा हमें इस लायक बनाए कि उसके सच्चे भक्त अनुयायी एवं पुत्र कहला सकने का गौरव प्राप्त करें। परमेश्वर हमें वह शक्ति प्रदान करे, जिसके आधार पर भय और प्रलोभन से मुक्त होकर—विवेक सम्मत कर्तव्य-पथ पर साहसपूर्वक चल सकें और इस मार्ग में जो अवरोध आवें उनकी उपेक्षा करने में अटल रह सकें। कर्मों के फल अनिवार्य हैं। अपने प्रारब्ध भोग जब उपस्थित हों, तो उन्हें धैर्यपूर्वक सह सकने और प्रगति के लिए परम पुरुषार्थ करते हुए कभी निराशा न होने वाली मनःस्थिति बनाए रह सकें। भगवान हमारे मन को ऐसा निर्मल बना दें कि कुकर्म की ओर प्रवृत्ति ही उत्पन्न न हो और हो भी तो उसे चरितार्थ होने का अवसर न मिल पाए। मनुष्य-जीवन की सफलता के लिए गतिशील रहने की पैरों में शक्ति बनी रहे। ऐसी उच्च स्तरीय प्रार्थना को ही सच्ची प्रार्थना के रूप में पुकारा जा सकता है, जिसमें धन, संतान स्वाथ्य' सफलता आदि की याचना की गई हो और जिसमें अपने पुरुषार्थ कर्तव्य के अभिवर्धन का स्मरण न हो ऐसी प्रार्थना को याचना मात्र कहा जाएगा। ऐसी याचनाओं का सफल होना प्रायः संदिग्ध ही रहता है।

परा वैज्ञानिकवेत्ता डॉ० एमेली ने लिखा है प्रार्थना, मात्र ईश्वर को धन्यवाद देने या उससे कुछ याचना करने की प्रक्रिया का नाम नहीं है, वरन् यह वह मनःस्थिति है, जिससे व्यक्ति शंका और संदेहों के जंजाल में से निकलकर श्रद्धा की भूमिका में प्रवेश करता है। अहंकार को खोकर समर्पण की नम्रता स्वीकार करना और उद्धत मनोविकारों को ठुकराकर परमेश्वर का नेतृत्व स्वीकार करने का नाम प्रार्थना है, जिसमें यह संकल्प भी जुड़ा रहता कि भावी जीवन परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार पवित्र और परमार्थी बनाकर जिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाएगा। ऐसी गहन अंतस्थल से निकली हुई प्रार्थना, जिसमें आत्म-परिवर्तन की आस्था जुड़ी हुई हो भगवान का सिंहासन हिला देती है। ऐसी प्रार्थना के परिणाम अद्‌भुत होते हैं, जिन्हें चमत्कार कहने में कुछ हर्ज नहीं है।

चिकित्सा शास्त्र पर नोबेल पुरस्कार एवं फ्रान्स के लियो विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ० करैल ने अपनी प्रत्येक सफलता के पीछे ईश्वर की अनुकंपा को छिपा हुआ देखा। वे कहते थे तुच्छ मानव-प्राणी उन्नति के उस स्तर पर नहीं पहुँच सकता, जहाँ साधारण लोग आमतौर से नहीं पहुँचते। विशिष्ट साधन, विशिष्ट परिस्थितियों और विशेष सूझ-बूझ के पीछे उन्होंने सदा परमेश्वर का दिव्य सहयोग झाँकता देखा और सदा यही कहा—यह वाहन अंतरंग से निकलने वाली भाव भरी प्रार्थना की प्रतिक्रिया है। उन्होंने अपनी चिकित्सा पद्धति के साथ औषधियों से अधिक प्रार्थना को महत्त्व दिया। वे हर रोगी से कहते थे सच्चे मन से प्रार्थना करो, अपनी भूलों के लिए पश्चात्ताप और भविष्य में निर्मल जीवन जीने की प्रतिज्ञा के साथ यदि प्रार्थना करोगे, तो वह जरूर पूरी सुनी जाएगी। सच्चा इलाज तो पश्चात्ताप है और ईश्वर के चरणों में अपना समर्पण। जो ऐसा कर सकेगा वह शारीरिक ही नहीं आंतरिक रोगों से भी छुटकारा पा लेगा।

महात्मा गाँधी ने अपने एक मित्र को लिखा था—"राम नाम मेरे लिए जीवन अवलंबन हैं, जो हर विपत्ति से पार कराता है।" जब तुम्हारी वासनाएँ तुम पर सवार हो रही हों नम्रतापूर्वक भगवान को सहायता के लिए पुकारो तुम्हें सहायता मिलेगी।"

जब मन दुर्बल हो रहा हो—मनोविकार बढ़ रहे हों और लगता हो कि पैर अब फिसला तब फिसला, तो सच्चे मन से प्रभु को पुकारना चाहिए। गज को ग्राह के चंगुल मे छुड़ाने वाले भगवान—पतन से परित्राण पाने के लिए व्याकुल आर्त भक्त की पुकार अनसुनी नहीं करते हैं और उस मनोबल के रूप में अंतःकरण में उतरते हैं, जिसे गरुड़ कह सकते हैं और जो पतनोन्मुख दुष्प्रवृत्तियों के सर्पों को उदरस्थ करते रहने का अभ्यासी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान को आत्म-समर्पण करने की स्थिति में जीव कहता है—तस्यैवाहम् (मै उसी का हूँ), तवैवाहम् (मैं तो तेरा ही हूँ) यह कहते-कहते वह उसी में इतना तन्मय हो जाता है—इतना घुल-मिल जाता है कि अपने आपे का विसर्जन, विस्मरण ही कर बैठता है और अपने को परमात्मा का स्वरूप ही समझने लगता है। तब वह कहता है—त्वमेवाहम् (मैं तो तू ही हूँ), शिवोऽहम् (मैं ही शिव हूँ), ब्रह्माऽस्मि (मैं ही ब्रह्म हूँ)।

भगवान को अपने में और अपने को भगवान में समाया होने की अनुभूति में जब इतनी प्रबलता उत्पन्न हो जाए कि उसे कार्य रूप में परिणत किये बिना रहा ही न जा सके, तो समझना चाहिए कि समर्पण का भाव सचमुच सजग हो उठा। ऐसी शरणागति व्यक्ति को द्रुतगति से देवत्व की ओर अग्रसर करती है और यह गतिशीलता इतनी प्रभावकारी होती है कि भगवान को अपनी समस्त दिव्यता समेत भक्त के चरणों में शरणागत होना पड़ता है। यों बड़ा तो भगवान ही है, पर जहाँ तक प्रार्थना, समर्पण और शरणागति की साधनात्मक प्रक्रिया का संबंध है इस क्षेत्र में भक्त को बड़ा और भगवान को छोटा माना जाएगा, क्योंकि अक्सर भक्त के संकेतों पर भगवान को चलते हुए देखा गया है।

वह सर्वव्यापी दिव्य चेतना, जो प्रत्येक क्षण हमारे अंतःकरण में श्रेष्ठता की प्रेरणा देती रहती है, उत्कृष्ट जीवन, आदर्श क्रियाकलाप का बोध एवं भाव भरती रहती है, उससे अपने संबंधों को जितनी ही गहराई से और स्पष्टता से समझा जा सके, जीवन को उतना ही प्रार्थनामय समझना चाहिए।

प्रार्थना के इसी अर्थ को जानने के कारण महात्मा गाँधी ने कहा था "मैं विद्वान नहीं हूँ, परंतु मैं प्रार्थना-परायण मनुष्य होने का विनम्र दावा करता हूँ।"

महत्त्वपूर्ण प्रार्थना की पद्धति ही प्रेरणा और प्रकाश है। पद्धति का महत्व तो है, पर वह प्रेरणा और प्रकाश दे सकने के रूप में हो। जहाँ प्रार्थना की वास्तविकता और प्रेरणा और दिव्य आलोक नहीं है, वहाँ कोई भी पद्धति फलप्रद नहीं हो सकती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इंजील में कहा गया है—"जो तुम माँगते हो, सो पाते नहीं क्योंकि तुम गलत माँगते हो।"

डाकखाने में जाकर जलेबी और दर्जी की दुकान पर किताबें माँगने पर निराशा ही हाथ लगेगी। ईश्वर सर्व-समर्थ दाता है, यह तो ठीक है, पर वह दाता भर नहीं, विज्ञाता और पिता भी है। हमारी आवश्यकताएँ वह हमसे अधिक जानता है। अतः देते समय वह विवेक से काम न लेगा, यह कल्पना करना हास्यास्पद तो है ही, खुद ईश्वर को मूढ़ या चापलूसी पसंद मानना है।

अतः प्रार्थना के पूर्व दो बातें तो समझ ही लेनी चाहिए। पहली यह कि ईश्वरीय अनुग्रह सत्यवृत्तियों सद्भावनाओं के रूप में ही हम पर बरस सकता है। ईर्ष्या-द्वेष, लोलुपता, व्यसन, अहंकार, रोग, विकार को बढ़ाने वाली प्रवृत्तियाँ और सुविधाएँ ईश्वर क्यों कर देगा ?

दूसरी यह कि ईश्वर ने किसी एक या कुछ एक व्यक्तियों को ही नहीं बनाया है। संपूर्ण सृष्टि की नियामक संचालक शक्ति ही ईश्वरीय सत्ता है, वह शक्ति ऐसी कोई व्यवस्था नहीं कर सकती, जिसमें नीति-न्याय की उपेक्षा हो पक्षपात हो या दूसरों के साथ अन्याय हो। अतः इस विश्व-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देने वाली प्रार्थना से अनुदान नहीं ईश्वर की प्रसन्नता ही प्राप्त हो सकती है। मैं अनीति कर रहा हूँ, तो भी मुकदमे में जीत जाऊँ। दूसरे चाहे जितना परिश्रम और पुरुषार्थ करें, पर मुझसे सदा पीछे ही रहें मैं आलस्य-प्रमाद-दुर्व्यसन में लिपटे-डूबे रहकर भी आपकी कृपा से सबसे आगे रहूँ सदा सफलता प्राप्त करूँ ऐसी प्रार्थनाएँ स्वीकार करने वाले ईश्वर को क्या कहा जाएगा ? स्पष्ट है कि ऐसे किसी वास्तविक ईश्वर की कोई संभावना नहीं है। वह तो अपने ही ओछेपन से गढ़ा गया। काल्पनिक ईश्वर ही हो सकता है।

प्रार्थना से यदि अनैतिक कामनाएँ भी पूरी होने लगें, तो फिर उन्हें समदर्शी कैसे कहा जाएगा ? चोरी-डकैती के ुकदमे में निर्दोष छूट जाना सट्टे जुए में बिना कमाई का धन मिल जाना आदि आए दिन देखने को तो मिलता है और इस तरह के लाभ पाने वाले भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे मानते प्रभु का अनुग्रह ही है, किंतु वह तो भ्रष्ट व्यवस्था में सफल हो सकने वाली कुटिलता, धूर्तता और तिकड़म का फल है प्रभु कृपा का नहीं। यदि बिना पढ़े धूपबत्ती जलाकर प्रसाद चढ़ाकर और हाथ जोड़ने से प्रभु या देवता प्रसन्न होकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करा दिया करें, तो फिर पुरुषार्थ और अध्यवसाय की आवश्यकता ही क्या रह जाएगी ? यदि इतनी सरलता से मनोकामनाएँ पूरी होने लगें, तो कर्मफल-सिद्धांत पूरी तरह गलत ही हो जाए।

क्या दशरथ को प्रार्थना करनी नहीं आती थी ? फिर क्यों उन्हें श्रवणकुमार को मारने का फल पुत्र-शोक में विलखकर मरने के रूप में भोगना पड़ा ? भगवान राम को तो प्रार्थना की जरूरत भी न थी इच्छा मात्र ही पर्याप्त सिद्ध होती, परंतु छिपकर बालि को बाण मारने के फल से बचने की इच्छा उन्होंने नहीं की और द्वापर में इसी बालि द्वारा बहेलिया रूप में श्रीकृष्ण के पैर में तीर मारकर बदला लिया गया। उस विधि-व्यवस्था को दूसरे के लिए वे क्यों टाल देंगे ?

इसका यह अर्थ नहीं कि ईश्वरीय सहायता कभी प्राप्त नहीं होती निश्चय ही दैवी अनुदान प्रार्थना से अनायास ही मिलते भी देखे जाते हैं, पर तभी जब वह प्रार्थना परिष्कृत मन द्वारा सदुद्देश्य से की जाए।

गज जब अपनी पूरी शक्ति लगा चुकता है और उसकी सारी सामर्थ्य समाप्त दिखने लगती है, तभी हरि उसका ग्राह से उद्धार करने दौड़ते हैं।

निस्संदेह प्रार्थना से रोग-मुक्ति बाधाओं की समाप्ति जैसे लाभ भी मिलते हैं, पर तभी जब प्रार्थना करने वाला शुद्ध चित्त हो और उसने अपने परिश्रम-पुरुषार्थ में कोई कसर न छोड़ी हो। अपनी हर छोटी आवश्यकता की पूर्ति के लिए धूपदीप नैवेद्य, आरती का सहारा लेने दौड़ पड़ना और प्रार्थना में प्रत्येक अवसर पर भौतिक उपलब्धियों की कामनाएँ करते रहना प्रार्थना का स्तर गिराता और उसे अप्रभावी बनाता है। अनैतिक अवांछनीय कामनाएँ प्रार्थना का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंग बनाए जाने पर वह प्रार्थना भी प्रभु-प्रार्थना नहीं कल्पना मात्र रह जाती है। ऐसी निकृष्ट आकांक्षाओं की पूर्ति की रट ईश्वरीय सत्ता तक पहुँच ही नहीं पाती। वह तो यों ही हवा के साथ उड़कर आकाश में अस्त-व्यस्त हो जाती है।

सदुद्देश्य प्रार्थना की आवश्यक शर्त है। आत्म-कल्याण और लोक मंगल के उच्च प्रयोजन के लिए ही दैवी-सहयोग मिल सकता है प्रत्येक युग में महामानवों ने ऐसे ही उद्देश्यों के लिये प्रार्थना कर दैवी अनुदान प्राप्त किए हैं और भारी कठिनाइयों के बीच भी आगे बढ़ते हुए आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त की हैं। श्रेष्ठ आदर्श के लिए चाही गई सद्बुद्धि, सद्विवेक, सत्प्रवृत्तियाँ प्रार्थना से सहज ही प्राप्त होती हैं और वही उच्च उद्देश्यों की दिशा में प्रगति का आधार बनती हैं।

जल में प्रवेश करते ही उसकी उष्णता या शीतलता का तत्काल भान होता है। आग के पास बैठने वाले को उसकी गर्मी मिलना स्वाभाविक है। किसी भी वस्तु की समीपता मनुष्य के जीवन में अपना विशिष्ट प्रभाव अवश्य छोड़ती है। बुरी वस्तु का संग, बुराई पैदा करता है और भली का भलाई। संसार के सभी लोग इसलिए भले आदमियों और भली वस्तुओं का सान्निध्य सुख प्राप्त करना चाहते हैं।

ईश्वरीय उपासना के सत्परिणाम भी मनुष्य को तुरंत देखने को मिलते हैं। जो लोग उसके वैज्ञानिक अस्तित्व का ज्ञान नहीं रखते वे भी उस लाभ से वंचित नहीं रहते। दियासलाई जान में जलाई जाए या अनजान से' उससे आग अवश्य पैदा होगी। उपासना की वैज्ञानिक प्रक्रिया को न समझने वाले भी ईश्वर से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक लाभों द्वारा अपने लौकिक एवं पारलौकिक उद्देश्य प्राप्त कर लेते हैं इनमें जरा भी संदेह नहीं है।

ईश्वर एक प्रकार का विज्ञान है और उपासना उसे प्राप्त करने की वैज्ञानिक पद्धति। ईश्वर-उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप बैठना। जल, अग्नि अथवा वायु की समीपता से जिस तरह मनुष्य तुरंत उसके गुणों का प्रभाव अनुभव करने लगता है, ठीक उसी तरह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त होते ही जीवन का आपा विस्तीर्ण होने लगता है उसकी शक्तियाँ प्रकीर्ण होने लगती हैं। उस प्रकाश में मनुष्य न केवल अपना मार्गदर्शन करता है, अपितु अनेक औरों को सन्मार्ग प्रेरणा देता है। एक ईश आराधक की शक्ति इसलिए बहुत बड़ी और जाज्वल्यमान मानी जाती है, क्योंकि वह सर्व शक्तिमान ज्योति में अंतार्हित होकर स्वयं भी उनका उत्तराधिकारी अनुभव करने लगता है। यजुर्वेद में इस संबंध में प्रकाश डालते हुए कहा गया है—

सपर्य्यगाच्छुकुमकायव्रणमस्नाविरं शुद्धमापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभू-स्वयंभूर्याथितथ्यतोऽर्थान्क
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

(यजु० ४०।१)

"जो परमात्मा देव तेजस्वी' निराकार व्रण रहित, स्नायु जाल से अपरिच्छिन्न, अलौकिक, पाप रहित कवि, मनीषी, सर्वव्यापी सर्व शक्तिमान है वह हमें भी इन शक्तियों से ओत-प्रोत करें।

इस मंत्र में परमात्मा की उपासना से प्राप्त होने वाले महान आध्यात्मिक लाभों को ईश्वरीय गुणों के रूप में दिखाया गया है। यह गुण अग्नि की उष्णता या जल की शीतलता के ही समान है और जो व्यक्ति उनकी जितनी अधिक समीपता में पहुँचता है, इन गुणों का उसी अनुपात में उसके जीवन में आविर्भाव होता चला जाता है और अंत में उसी में लीन होकर जीव-भाव से मुक्त हो जाता है।

परमात्मा को "शुक्रम" अर्थात् प्रकाश स्वरूप कहा जाता है। प्रकाश तेजस्विता, निर्दोषिता एवं ज्ञान का प्रतीक है। ईश्वर उपासना से जीवात्मा का उत्थान इसी कक्षा में प्रारंभ होता है, जब तक मनुष्य अपनी जीव-भाव में था, तब तक वह अज्ञान-ग्रस्त था, उसे संसार की वस्तु स्थिति का कुछ भी ज्ञान न था। थोड़े-से क्षणिक सुखों की पूर्ति का ही अपने जीवन का उद्देश्य समझता था और भोग में लिप्त था। इस कारण उसका जीवन दोषयुक्त भी था। भोग शारीरिक रोग-शोक पैदा करने वाले होते हैं, उनसे इंद्रियों की क्षमता नष्ट होती है और मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु की ओर अग्रसर होता है। भोगों से जहाँ शारीरिक व्याधियाँ बढ़ती हैं, वहाँ मानसिक चिंताएँ भी बढ़ती हैं। यह चिंताएँ मनुष्य को बंधन में बाँधती हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और दुःखी करती हैं, पर जैसे ही परमात्मा के शुक्रम् अर्थात् प्रकाश तत्त्व ने उसके जीवन् में प्रवेश किया कि वह सांसारिक भोगों की निःसारता अनुभव करने लगा। अब उसे क्षणिक सुख निरर्थक अनुभव होने लगते हैं और वह दैवी प्रकाश में अपना जीवन लक्ष्य निर्धारित करता है। वह देखता है कि जब मुझे केवल सुख और असीम सुख की चाह है, तो मैं इन क्षुद्र वासनाओं के पीछे क्यों भटकता फिरूँ ? ऐसे भी प्रश्न उसके जीवन में उतरते हैं, जिसमें संसार के गहन रहस्य और मनुष्य जीवन की पारलौकिकता की ओर उसके विचार दौड़ने लगते हैं। वह ज्ञान ही परमात्मा का प्रकाश है। इसे ही उनकी कृपा मान सकते हैं परमात्मा का यह प्रकाश पाए बिना मनुष्य जीवन का उद्धार भी संभव नहीं।

प्रकाश जीव के विकास की प्रारंभिक अवस्था भी है और अंतिम भी। प्रारंभ इसलिए है कि जीव की शक्तियों का विस्तार यहीं से प्रारंभ होता है। इस ज्ञान के उदय के साथ मनुष्य के अंतःकरण में आत्म-ज्ञान की तीव्र आकांक्षा जाग्रत् होती है और चूँकि अंत में जीव उसी प्रकाश में ही समाधि लेता है, यह परम लक्ष्य की अंतिम अवस्था भी है। इसलिये वेदशास्त्रों में ज्ञान के महत्त्व को सर्वोपरि माना गया है और उसके बिना मनुष्य को पशुवत् बताया गया है।

परमात्मा का दूसरा गुण है—अकायम्। वह निराकार है। उनका शरीर मनुष्यों जैसा नहीं अर्थात् वह मनुष्यों जैसे कार्य नहीं करता। उपासक के अंतःकरण में यह गुण भी शीघ्र ही चमकता है अर्थात् परमात्मा का ज्ञान-तत्त्व या प्राण-तत्त्व जब उसने धारण किया, तो उसे सर्वप्रथम यह अनुभव हुआ कि वह अब तक जिस शरीर को ही संसार के सुख और अहंकार की पूर्ति का प्रमुख साधन समझे हुए था या यों कहें कि अब तक वह अपने शरीर को ही जीवन और प्राण समझता था अब उसे उससे विरक्ति होने लगती है। विरक्ति का यह अर्थ नहीं कि वह शारीरिक क्रियाएँ छोड़ देता है, वरन् अब वह इसे साधन या परमात्मा के मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित हुआ देखता है। जो इंद्रिय-लिप्साएँ उसे अब तक परेशान किए हुए थीं, अब उसने समझा कि इन शारीरिक विकृतियों में उसे परेशान नहीं होना चाहिए। यह शरीर नाशवान है, पंचभौतिक है, कभी भी नाश हो सकता है। अतः अब इस पर स्वामित्व कर इसका सदुपयोग किया जाना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन भावनाओं के उदय के साथ ही उसे प्राण-तत्त्व या शरीर में प्रतिष्ठित चेतना का अनुभव हुआ और उसने विचार किया कि अदृश्य शरीर—प्राण-शरीर को प्राप्त करना चाहिए। यह प्राण-शरीर निराकार है, जो चिंतन और विचार द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। सूक्ष्म इंद्रियाँ ही उसे जान सकती हैं। अतः उसकी मनोवृत्तियाँ अंर्तमुख होने लगी। वह कायिक हितों से परांगमुख होकर अपने निराकार स्वरूप का चिंतन और उनका रहस्य जानने की इच्छा करने लगा।

परमात्मा अव्रणत् है अर्थात् उसे किसी प्रकार से घाव नहीं लगते। घाव मनुष्य के शरीर में ही लग सकते हैं। शास्त्रकार ने बताया है—**"नैनं छिदति शस्त्राणि नैनं दहित पावकः।"** अर्थात् आत्मा को शस्त्र छेदन नहीं कर सकते आग उसे जला नहीं सकती। जब तक मनुष्य में शरीर भाव था, तब तक सांसारिक ताप और शारीरिक कष्ट उसे अप्रिय लगते थे और हर क्षण इनसे छुटकारा पाने का ही वह प्रयत्न करता था, किंतु अब उसने अनुभव किया शारीरिक लालसाएँ अभी भी ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में उनकी बाधक है अतः इनका उच्छेदन करना चाहिए। यह तप के अर्थ में है। तप को शारीरिक तितीक्षा भी कहते हैं। अर्थात् जान-बूझकर शरीर को कष्ट देते हैं, जिससे आत्मभाव स्पष्ट होने लगे जीव-भाव से मुक्ति मिलने लगे।

शरीर को कष्ट देने का तात्पर्य यह नहीं है कि उसे शस्त्रों से छेदा या आग पर जलाया जाए, वरन् उन तितिक्षाओं को जगाना है जिससे लौकिक सुखों की कामना मर जाए। नियमित जीवन, स्वच्छता सफाई जप प्राणायाम, उपवास, कृच्छ-चंद्रायण आदि तप कहे गए हैं, इनका उद्देश्य आत्मा को तपाना है और उसे परमात्मा से मिलने के अनुरूप शुद्ध और तेजस्वी बनाना है।

किंतु मनुष्य की युग-युगांत की दमित वासनाएँ इतनी शीघ्र नष्ट नहीं हो जाती। शरीर और मन की यह सफाई ठीक ऐसी ही है जैसी किसी गंदी नाली में शुद्ध जल डालकर उसकी सफाई की जाती है। सफाई करते समय बहुत दिनों से सतह में जमी हुई गंदगी की सड़ाँध इतनी तीव्रता से फैलती है कि वह आस-पास वालों का दिमाग बदबू से खराब कर देती है। आत्मोत्थान की विभिन्न साधनाओं द्वारा भी शरीर में वासनाओं और लौकिक कामनाओं की ऐसी सड़ाँध उत्पन्न होती है, जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को झकझोर कर रख देती है। कुछ क्षण के लिये मन को काबू में करना कठिन हो जाता है। इस हलचल की प्रक्रिया को अग्नि-दीक्षा या प्राणी-दीक्षा के नाम से पुकारा जाता है और उस स्थिति को सम्हालने के लिए किसी योग्य तथा अनुभवी मार्गदर्शक की बड़ी आवश्यकता बताई गई है। परमात्मा का "अस्नाविरम्" गुण इस बात का बोध कराता है कि उपासना परमात्मा की प्राप्ति के लिए जल संधान करे, तो वह शरीर की चंचलता को हर तरह से रोके, अथवा यह कह सकते हैं कि परमात्मा की ओर अचल भावना से प्रतिष्ठित हुई जीवात्मा शारीरिक चचंलता, इंद्रियों की भड़कन या मनोविकारों से प्रभावित नहीं होती है।

परमात्मा नित्य शुद्ध है वह अपने उपासक में पाप कैसे देख सकता है ? दूध में शुद्ध जल मिल सकता है, गंदा जल तो उसके स्वरूप को ही बिगाड़ देता है। अग्नि में लोहा डाला जाता है तो वह भी अग्नि वर्ण हो जाता है। परमात्मा अपने भक्त के पापों को उसी प्रकार संहार कर उन्हें नष्ट करता है। यही बात उपासक की ओर से भी होती है। वह अनुभव करता है कि पाप पूर्ण जीवन बिताकर परमात्मा को पाना संभव नहीं। इन दोनों स्थितियों में संतुलन रखकर वह अपने पापों का धैर्यपूर्वक प्रक्षालन करता है और परमात्मा में मिल जाने की योग्यता प्राप्त करने में संलग्न रहता है।

विचारों से भावनाओं की शक्ति बड़ी मानी गई है। परमात्मा मनीषी भी है और कवि भी। कविता आत्मा की सर्व व्यापकता की अभिव्यक्ति है। आत्मा जब विकसित होती है, तो सारे संसार के सुख-दुःख में वह अपना सुख-दुःख अनुभव करने लगती है। यह गुण ईश्वर के उपासक में भी उसी रूप में जागृत होता है। उसमें भी दया, प्रेम, त्याग उदारता, सद्व्यवहार, सहानुभूति और कष्ट सहिष्णुता जैसी कवि-भावनाएँ जागती हैं। अपने स्वार्थ का परित्याग कर उसे परमार्थ में विशेष आनंद आने लगता है। संसार में जितने भी संत भक्त हुए हैं, उन्होंने मनुष्य की सेवा को ही परमधर्म बताया है। ऐसा तभी संभव हुआ, जब परमात्मा की उपासना के फलस्वरूप उनकी कवि गुण-भावनाएँ जागृत हुई। इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि वाल्मीकि-अजामिल और सदन जैसे कठोर और दुष्ट प्रकृति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तियों ने जब ईश्वर की शरण ग्रहण की, तो वे इतने सहृदय हुए कि मानवता की सेवा में ही अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

विचारों और भावनाओं की सर्वोच्चता में पहुँचने पर उपासक भगवान "परि—भू" शक्ति का रसास्वादन करता है। ईश्वर सर्वव्यापी, परिभू है। संसार के कण-कण में उसकी सत्ता समा रही है। पहाड़, नदियाँ, सागर, वृक्ष, वनस्पति, सूर्य, चंद्र, नक्षत्र सब उसी के बनाए हुए हैं। सर्वत्र उसी का प्रकाश भर रहा है। कण-कण में, रज-रज में वही खेल, खेल रहा है। जल, थल नभ ऐसा कोई भी स्थान नहीं जो परमात्मा से रिक्त हो। यह विराट जगत उसी का स्वरूप है। एक-एक तिनके पर उसकी दृष्टि है, किसी का व्यवहार उससे छुपा हो यह संभव नहीं, उसकी आँख से कोई बचकर नहीं जा सकता, कोई भी व्यक्ति बुरी बात करे और उसे न सुन ले ऐसा कभी संभव नहीं। उपासक परमात्मा की सर्व व्यापकता की अनुभूति प्राप्त कर आनंद विभोर हो जाता है। वह अपने आपको भी उसी अविनाशी तत्त्व में विलीन हुआ सर्वव्यापक सत्ता के रूप में देखता है, स्वयं भी सर्व व्यापक हो जाता है।

परमात्मा सर्व शक्तिमान भी है। उसकी व्यवस्था बड़ी विशाल बड़ी अनोखी है। संसार के सब कर्मों की वह देख-रेख करता है। कर्म का फल भी वही देता है। रक्षा, पालन और विनाश भी वही करता है, पर वह यह सब अलिप्त निर्विकार भाव से किया करता है। संसार के कल्याण की दृष्टि से ही उसने अपनी शक्तियाँ विकसित की हैं और उनका लाभ भी वह सारे संसार को देता रहता है। ईश्वर का अंचल पकड़ने वाला भी अंत में परमात्मा की यह महान विभूति प्राप्त कर अलिप्त निर्विकार और जीवन मुक्त हो जाता है।

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनपवमास्य शुष्मिणः।
चरंति विचुतो दिधि।।

(ऋ० ९-४१-३)

"बलवान सोम के तेज अभिनव किए जाते समय विद्युत् के समान घूमते और चमकते हैं और सोम का शब्द वर्षा के बाद के समान ही सुनाई पड़ता है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर की स्तुति और उपासना मनुष्य के कल्याणार्थ आवश्यक मानी गई है। प्राचीनकाल के जितने भी धर्म और मतमतांतर हैं, उन सबमें इसका कोई न कोई विधान पाया जाता है चाहे ईश्वर को निराकार मानने वालों को देखिए चाहे साकार वालों को स्तुति और प्रार्थना की उपयोगिता सब स्वीकार करते हैं। भारतवर्ष में सैकड़ों ही नहीं हजारों ही विभिन्न संप्रदाय पाए जाते हैं, जिनके सिद्धांतों में जमीन आसमान का-सा अंतर है, पर एक बात सबमें समान रूप से मिलेगी और वह यही कि वे किसी न किसी रूप में ईश्वर का गुणगान अवश्य करते हैं और उससे अपने कल्याण की प्रार्थना करते हैं। थोड़े से अर्द्धदग्ध लोग विज्ञान का नाम लेकर इस बात का विरोध करने को तैयार हो सकते हैं, पर सत्य बात यह है कि उन्होंने न विज्ञान के मर्म को समझा है और न अध्यात्म क्षेत्र में कदम रखा है। ऐसे लोग प्रायः इधर-उधर की दो चार बातों को सुनकर मिथ्याभिमानी हो जाते हैं और उसी धुन में अपने से कहीं अधिक अनुभवी और ज्ञान सागर में प्रविष्ट महापुरुषों के विरुद्ध निरर्थक बकवास किया करते हैं।

पर उपासना और साधना के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि यह सच्चे भाव से चित लगाकर की जाए। आजकल जिस प्रकार बहुसंख्यक 'धार्मिक' कहलाने वाले व्यक्ति दुनियाँ को दिखाने के लिए अथवा एक रस्म पूरी करने के लिए मंदिर में जाकर दर्शन कर लेते हैं और नियम को पूरा कर लेने के लिए एकाध माला भी जप लेते हैं, उससे किसी बड़े सुफल की आशा नहीं की जा सकती। उपासना और साधना तो तभी सच्ची मानी जा सकती है, जबकि मनुष्य उस समय समस्त सांसारिक विषयों और आसपास की बातों को भूलकर प्रभु के ध्यान में निमग्न हो जाए। जब मनुष्य इस प्रकार की संलग्नता और एकाग्रता में अपने इष्टदेव की उपासना करता है, तभी वह अध्यात्म मार्ग पर अग्रसर हो सकता है और तभी वह दैवी कृपा का लाभ प्राप्त कर सकता है। इसी तथ्य को समझाने के लिए इस मंत्र में बतलाया गया है कि जब मनुष्य हृदय और आत्मा से सोम का अभिनव (परमात्मा की उपासना) करता है, तब उसे स्वयंमेव ईश्वरीय तेज के दर्शन होने लगते हैं और परमात्मा की कृपा अपने चारों तरफ मेह की तरह अजस्र बरसती जान पड़ती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार में जीवन निर्वाह करते हुए साधारण मनुष्य को अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है, विपरीत परिस्थितियों में होकर गुजरना पड़ता है, विरोधियों के साथ संघर्ष करना पड़ता है और लोगों की भली-बुरी सब प्रकार की आलोचना को सहना पड़ता है। इससे उसके जीवन में स्वभावतः उद्वेग, अशांति, भय, क्रोध आदि के अवसर आते हैं, जिसका उस पर न्यूनाधिक परिमाण में प्रभाव पड़ता है और वह जीवन में मानसिक अशांति-कष्ट का अनुभव करने लगता है। ऐसा मनुष्य अपने कष्टों के निवारणार्थ और मन तथा आत्मा की शांति के लिए परमात्मा का आश्रय ग्रहण करता है; मन, वचन और कर्म से उसकी उपासना में संलग्न होता है, तो उसकी अनास्था में आस्था परिवर्तित होने लगती है। साधना में अग्रसर होकर वह अपने चारों ओर परमात्म-शक्ति की क्रीड़ा अनुभव करता है और यह समझने लगता है कि संसार में जो कुछ हो रहा है, वह उस प्रभु की प्रेरणा और इच्छा का ही फल है, चाहे वह तत्काल उसे न समझ सके, तब उसकी व्याकुलता और अशांति दूर होने लगती है और उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो ग्रीष्म ऋतु से व्यथित, श्रांत, क्लांत व्यक्ति को शीतल और शांतिदायक वर्षा-ऋतु प्राप्त हो गई। मनुष्यों ने अपनी भिन्न-भिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए तरह-तरह की साधनाएँ निकाली हैं। धन, संतान, वैभव, सम्मान, प्रभाव, विद्या, बुद्धि आदि की प्राप्ति के लिए लोग भाँति-भाँति के उपायों का सहारा लेते रहते हैं, जिनसे उनको अपनी योग्यतानुसार कम या अधिक परिमाण में सफलता भी प्राप्त होती है, पर आत्मिक शांति, प्राप्त करने, सांसारिक तापों से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय यही है कि मनुष्य भिन्न कामनाओं का मोह त्यागकर सच्चे हृदय से परमात्मा का आश्रय लें और शुद्ध भाव से उनकी स्तुति और प्रार्थना करें। हमें स्मरण रखना चाहिए कि सब प्रकार की कामनाओं को पूरा करने वाला भी वास्तव में भगवान ही है। इसलिए अगर हम उसकी कृपा प्राप्त करके आत्मिक शांति प्राप्त कर लेंगे, तो हमारी अन्य उचित कामनाएँ आवश्यकताएँ अपने आप ही पूरी हो जाएगी।

कितने ही मनुष्य इस विवेचना से यह निष्कर्ष निकालेंगे कि परमात्मा के ध्यान में लीन होने से मनुष्य की कामनाएँ शांत हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाएगी, उसमें संसार के प्रति विरक्तता का भाव उदय हो जाएगा और इस प्रकार वह आत्मसंतोष का भाव प्राप्त कर लेगा। इस विचार में कुछ सच्चाई होने पर भी यह ख्याल करना कि परमात्मा की उपासना का सांसारिक कामनाओं की पूर्ति से कोई संबंध नहीं, ठीक नहीं है। एक अन्य वेद मंत्र में कहा गया है कि—**"अपमिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावतम्।"** भगवान का धन कभी न रुकने वाला है। यह उसके उपासकों को इस प्रकार प्राप्त होता है जिस प्रकार नीचे की ओर बहता हुआ जल। वर्तमान समय में भी अनेक ऐसे व्यक्ति हो चुके हैं, जो बहुत साधारण विद्या-बुद्धि के होते हुए भी परमात्मा के भरोसे सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं और जो अपने और दूसरों के बड़े-बड़े कार्यों को सहज में ही पूरा कर देते हैं। हम अपने प्राचीन ग्रंथों में संतों, तपस्वियों और भक्तों के जिन चमत्कारों का वर्णन पढ़ते हैं, उनसे तो यह बात स्पष्ट दिखलाई पड़ती है कि ईश्वर की सच्चे हृदय से उपासना करने वालों को किसी सांसारिक संपदा का अभाव नहीं रहता। उपासना के सत्यपरिणाम अवश्यंभावी हैं।

मंत्र में यह भी कहा गया है कि परमात्मा के उपासक को उसके तेज के भी दर्शन होते हैं। विचार किया जाए तो वास्तव में यही उपासना के सत्य होने की कसौटी है। जो कोई भी एकाग्रचित से और तल्लीन होकर परमात्मा का ध्यान करेगा, उसे कुछ समय उपरांत उसके तेज का अनुभव होना अवश्यंभावी है। यह तेज ही साधक के अंतर को प्रकाशित करके उसकी भ्रांतियों को दूर कर देता है और जीवन के सच्चे मार्ग को दिखलाता है। इसी प्रकार से मनुष्य सच्चे ज्ञान का अधिकारी बनता है और सब प्रकार की भव बाधाओं को सहज में पार कर सकने की सामर्थ्य प्राप्त करता है। यही सच्ची उपासना का तत्व दर्शन एवं स्वरूप है।

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org